सं. 134 जुलाई-सितंबर 2012 ISSN 0972-2386

कडलमीन

सी एम एफ आर आइ समाचार

http://www.cmfri.org.in

विषय सूची

'उत्तर कन्नड जिला का एकीकृत विकास' पर राष्ट्रीय परामर्श कार्यक्रम 5

कारवार अनुसंधान केंद्र के परिष्कृत प्रयोगशाला एवं कार्यालय मकान का उद्घाटन 6

कारवार के समुद्री पिंजरा क्षेत्र में महानिदेशक का मुआइना 8

रामनाथपुरम के वेतालै में पोम्पानो के पिंजरा पालन में कारीगरी नवीकरण 10

अनुसंधान मुख्य अंश 12

राजभाषा कार्यान्वयन 15

प्रदर्शनियाँ 16

प्रशिक्षण कार्यक्रम 17

घटनाएं 20

कृ वि कें समाचार 21

कार्यक्रम में सहभागिता 22

कार्मिक समाचार 23

कोचीन के पश्च जल में मल्लट मछली का पिंजरा पालन - सफलता की कहानी

पृष्ठ 3

सी एम एफ आर आइ को इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार दूसरी बार

अंतिम आवरण पृष्ठ देखें

हर कदम, हर डगर किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

भाकृअनुप ICAR
केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
पी.बी.सं.1603, एरणाकुलम नोर्त पी.ओ. कोचीन - 682 018
कडलमीन TM cadalmin

प्रकाशक

डॉ. जी. सैदा रावु
निदेशक
केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
पोस्ट बोक्स सं.1603, एरणाकुलम नोर्त पी.ओ.
कोचीन - 682 018, केरल, भारत
दूरभाषः 0484-2394867
फैक्सः 91-484-2394909
ई-मैलः mdcmfri@md2.vsnl.net.in
वेबसाइटः www.cmfri.org.in

संपादकीय मंडल
डॉ. आर. सत्यदास, अध्यक्ष
डॉ. आर. नारायणकुमार
डॉ. सी. रामचन्द्रन
जे. नारायणस्वामी

संपादक
वी. एड्विन जोसफ

सचिवीय सहायता
पी. आर. अभिलाष

हिंदी अनुवाद
ई. के. उमा

सी एम एफ आर आइ के बारे में

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीन स्थापित केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन समुद्री मात्स्यिकी और समुद्र कृषि में अनुसंधान और प्रशिक्षण के लिए समर्पित सर्वप्रमुख अनुसंधान संस्थान है।

सी एम एफ आर आइ के तीन क्षेत्रीय केंद्र याने कि मंडपम कैंप, विशाखपट्टणम और वेरावल तथा सात अनुसंधान केंद्र भारत की तट रेखा में कार्यरत हैं जो देश के समुद्रवर्ती राज्यों को समुद्री मात्स्यिकी नीति का अनुपालन करने में सहायता प्रदान करते हैं।

निदेशक कहते हैं

प्रिय सहकर्मियो

भारत समुद्री मात्स्यिकी उत्पादन करने वाले देशों में अग्रणी है और यहाँ का समुद्री मात्स्यिकी उत्पादन 4 मिलियन है। भारतीय समुद्रों से विभिन्न प्रकार (जाति) और विभिन्न आकार की मछलियाँ पकड़ी जाती है। इनमें से लगभग 8 लाख टन मछलियों जिनका मूल्य 1.4 मिलियन $ है, का निर्यात किया जाता है. पिछले साठ वर्षों के दौरान अर्थ व्यवस्था में आजीविका और रोजगार का योगदान देती हुई पांच लाख टन से चालू स्तर तक मात्स्यिकी की बढ़ती हुई है. भारत में लगभग 50 मिलियन लोग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मात्स्यिकी पर निर्भर रहते हैं. पकड़ी गयी मछली का उतार करने के केंद्रों में प्रतिवर्ष 5000 करोड़ रुपए मूल्य की मछलियों का अवतरण होता है और अब सरकार समुद्री मात्स्यिकी के वैज्ञानिक प्रबंधन पर ज़ोर देने लगी है.

भारत की समुद्री मात्स्यिकी को लगभग 2000 वर्गों में विशेषित किया जाता है और मुख्यतः यंत्रीकृत आनायकों, कोष संपाशों, गिल जालों तथा अनेकों यंत्रीकृत और अयंत्रीकृत छोटे नावों द्वारा मछली पकड की जाती है. पश्चिमी शीतोष्ण देशों में मात्स्यिकी कुछ बडी मछली वर्गों से जुड़ी हुई है और इसका प्रबंधन करना आसान भी है. भारत में समुद्री मछली कम आयु वाली (2-3 वर्ष की आयु) से अधिक उत्पादन जगायी जाने वाली मात्स्यिकी से विशेषित है और अधिकतः बहुजातीय गिअरों (जालों) द्वारा मछली पकड़ी जाती है. मतलब यह है कि यहाँ मात्स्यिकी से संबंधित भारी वैज्ञानिक आंकडों का प्रबंधन करना बडी मुशकिल की बात है. फिर भी विश्व परिवेश की तुलना करने पर, भारत में समुद्री मात्स्यिकी की कुल पकड़ और पकड़ दर में बढ़ती की प्रवणता दिखायी पड़ती है.

भारत में स्वीकृत प्रबंधन उपायों में, पूर्व और पश्चिम तटों में विविध कालावधि के दौरान यंत्रीकृत मात्स्यिकी में लगाए जाने वाले 47 दिनों का मत्स्यन रोध प्रमुख है. फिर भी, अयंत्रीकृत मात्स्यिकी से मत्स्यन अनुमत्य था. अतः इस से परिरक्षण पर होने वाला संघात सीमित था.

समुद्र की सभी मछलियाँ अंडजनन करती हैं और ये अंड बहकर तट पर, जहाँ पानी की गहराई 20 मी. से कम है, जमा होते हैं. यह क्षेत्र अत्यधिक उत्पादनशील और अतिजीवितता और टिकाऊ बढ़ती के लिए आवश्यक प्लवकीय खाद्यों से समृद्ध है और अंडों से बाहर आने वाले डिंभकों की बढ़ती के लिए अच्छा नर्सरी स्थान है. किशोर अवस्था तक की बढ़ती के बाद ये अपने आवास स्थानों की ओर प्रवास करती हैं. इस लिए मात्स्यिकी का टिकाऊपन कायम रखने के लिए मछली के पालन स्थानों की सुरक्षा पर केंद्रित करते हुए मात्स्यिकी प्रबंधन रूपाइत करना आवश्यक है.

भारत की परिस्थिति में 20 मी. की गहराई के तटीय क्षेत्रों में कृत्रिम भित्ति परिनियोजित करना अच्छा उपाय है. कृत्रिम भित्ति समुद्र तट पर रखे जाने वाले कंकरीट के तिकोनाकार ढांचे / मोड्यूल हैं. ये कई प्रकार की अंडयुक्त मछलियों और किशोर मछलियों को पनाह देते हैं. अंड को संलग्न होने के धरातल के रूप में भी ये काम करते हैं. एक बार कृत्रिम भित्तियाँ लगाने पर उसी स्थान में आनाय या कोष संपाश परिचालन नहीं किया जा सकता है और स्वाभाविक रूप से यह स्थान 'समुद्री संरक्षित क्षेत्र' (एम पी ए) बन जाता है और इसी प्रकार जैवविविधता, आवास स्थान और अंडशावक को संरक्षण देते है और मत्स्यन क्षेत्र में लगातार छोटी मछलियों का वितरण (भर्ती) करते रहते हैं.

इस बात पर ज़ोर दिया जाता है कि समुद्री मात्स्यिकी प्रबंधन का प्रमुख लक्ष्य उत्पादन बढ़ाने की कम प्रत्याशा में मात्स्यिकी को कायम रखना है. मत्स्यन पोतों की प्रबलता नियमित रखने के लिए समुद्र की संपत्ति की शक्यता का कई तरह आकलन किया जाता है. वर्तमान में उपयुक्त किए जाने वाला आधुनिक तरीका दूर संवेदन से समुद्र के हरितक उत्पादन का आकलन करके मछली उत्पादन का अनुमान लगाया जा सकता है. इस से भारत में समुद्री मात्स्यिकी के क्षेत्रीय प्रबंधन की दक्षता बढ़ जाएगा. फिर भी समुद्री मछलियों, विशेषतः पामफ्रेट आदि उच्च मूल्य वाली मछलियों का उत्पादन बढ़ाने के लिए मछली संततियों को कृत्रिम भित्ति के क्षेत्रों की प्राकृतिक परिस्थिति में प्लवमान पिंजरों में संभरण करके पेल्लेट या प्राकृतिक खाद्य देकर पालन किया जा सकता है.

लगभग 6 मी. के व्यास के पिंजरे में करीब 8 महीने की अवधि के दौरान लगभग 5 टन मछली का उत्पादन किया जा सकता है और इस से 7.00 लाख रुपए की आमदनी भी प्राप्त होती है. यह प्रौद्योगिकी भूमि रहित लोगों के लिए आश्वासदायक होगा क्योंकि वे मछली पालन खुले सागर में कर सकते हैं. एक पिंजरा एक हेक्टयर के तालाब से मछली उत्पादन करने के बराबर है. इस के लिए मछली को अंडजनन करने लायक अंडशावक के रूप में पालतू बनाया जाता है और छोटे मछली संततियों को प्लवमान पिंजरे में संभरित करके पालन किया जाता है. उच्च मूल्य वाली समुद्री मछली का उत्पादन बढ़ाने का यह एकमात्र उपाय है.

सादर,

डॉ. जी. सैदा रावु
निदेशक

मुख आवरण चित्रः श्री के.बाबु, माननीय मात्स्यिकी मंत्री, केरल द्वारा मछली संग्रहण का उद्घाटन करने का दृश्य

श्री. के. बाबु, माननीय मात्स्यिकी मंत्री, केरल द्वारा मछली संग्रहण का उद्घाटन

कोचीन के पश्च जल में मल्लट मछली का पिंजरा पालन - सफलता की कहानी

" सी एम एफ आर आइ द्वारा विकसित पिंजरा मछली पालन मछली उत्पादन बढ़ाए जाने के लिए प्रोत्साहक बन जाएगा" **मात्स्यिकी मंत्री, केरल सरकार कहते हैं**

" केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सी एम एफ आर आइ) द्वारा विकसित पिंजरा मछली पालन प्रौद्योगिकी को केरल सरकार के *मत्स्य समृद्धि* कार्यक्रम के अंदर राज्य में मछली उत्पादन बढ़ाए जाने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा" श्री के.बाबु, पोर्ट, एक्साइस एवं मात्स्यिकी मंत्री, केरल सरकार ने कहा. एरणाकुलम जिला के चिट्टाट्टुकरा पंचायत के पूयप्पिल्ली नामक स्थान के समुद्री पिंजरों में पालित मल्लेट मछली *मुगिल सेफालस* के फसल संग्रहण का उद्घाटन करते हुए उन्होंने यह बताया. पिंजरा मछली पालन प्रौद्योगिकी को हाल ही में कृषि मंत्रालय (भारत सरकार) की केंद्रीय प्रायोजित मात्स्यिकी विकास योजना द्वारा अनुमति दी गयी है, इस लिए किसान लोग 40% सहायिकी मिल सकते हैं. मंत्री ने यह घोषणा की कि केरल सरकार सी एम एफ आर आइ के सहयोग से इस अवसर को

श्री के.बाबु, माननीय मात्स्यिकी मंत्री,
केरल द्वारा मछली संग्रहण का उद्घाटन करने का दृश्य

उपयोग में लाने की योजना रूपायिज कर रही है. उन्होंने यह भी बताया कि यह प्रौद्योगिकी डुबकी जान परिचालकों के लिए आजीविका का बदल उपाय बन जाएगा क्योंकि

संग्रहित मछली के साथ उच्च पदाधिकारी व्यक्तिगण

संग्रहित मछली के साथ मछुआरे

अब सरकार द्वारा राज्य जल परिवहन के विस्तार के लिए डुबकी जाल एककों को निकाला जा रहा है.

राज्य में खुले पश्च जल व्यवस्थाओं के षिंजरों में मल्लट मछली *एम.सेफालस* का पालन पहली बार किया जा रहा है. सी एम एफ आर आइ के वैज्ञानिकों द्वारा वर्ष 2007 से लेकर लगातार अनुसंधान प्रयासों से विकसित और सुधारित पिंजरा पालन प्रौद्योगिकी देश के विभिन्न स्थानों के खुले सागर के पिंजरों में उच्च मूल्य की समुद्री मछली जातियों जैसे समुद्री बास, पोमपानो, कोबिया और महाचिंगटों के पालन के लिए सफल रूप से साबित हुई है.

चिट्टाट्टुकरा पंचायत के चार स्थानीय कारीगरी मछुआरा कुटुम्बों के एक ग्रुप के नेतृत्व में पी पी पी (सार्वजनिक निजी सहभागिता) तरीके से पिंजरे का परिचालन किया गया. प्राकृतिक स्थानों से संग्रहित छोटी मल्लट मछलियों को मिट्टी के तालाबों में स्थापित हाप्पाओं में 25 ग्राम और इस से अधिक आकार तक पालन किया जाता है. नर्सरी पालन के बाद जनवरी-फरवरी 2012 के दौरान लगभग 5500 अंगुलिमीनों को पिंजरे में संभरित किया गया. पालन निदर्शन के लिए एच डी पी ई से बनाए गए 6 मीटर व्यास के प्लवमान पिंजरा उपयुक्त किया गया. पिंजरा अनुरक्षण और खाद्य सहित कुल परिचालन व्यय 1.1लाख रुपए आकलित किया गया. पालन के उपरांत 5 लाख रुपए मूल्य के लगभग 1650 मल्लट मछलियों का उत्पादन किया गया. मछली का औसत भार 385 और 450 ग्राम आकलित किया गया.

इस अवसर पर अड्वकेट वी.डी.सतीशन, विधान सभा सदस्य, नोर्त परवूर ने बताया कि पूयप्पिल्ली के पालन निदर्शन के आधार पर केरल के कई अनुपयुक्त जलाशयों में इस प्रौद्योगिकी का परिचालन करने की बडी शक्यता है. डॉ. बी.मीनाकुमारी (उप महानिदेशक, मात्स्यिकी, भा कृ अनु प) मछली फसल संग्रहण के उद्घाटन कार्यक्रम में अध्यक्ष रही. अपने अध्यक्षीय भाषण में उप महानिदेशक (मात्स्यिकी) ने केरल के पश्चजलों में पिंजरा मछली पालन की साध्यताओं के बारे में सूचित किया. डॉ. जी.सैदा रावु, निदेशक, सी एम एफ आर आइ ने अपने स्वागत भाषण में टिकाऊ पालन प्रौद्योगिकियों द्वारा मछली उत्पादन बढ़ाए जाने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला. श्रीमती अरुणजा तम्बी, अध्यक्ष, चिट्टाट्टुकरा पंचायत और श्रीमती मिनी राजेश, वार्ड सदस्य ने अपने पंचायत में संस्थान के अनुसंधान और निदर्शन गतिविधियों के साथ सहयोग देने की इच्छा प्रकट की. डॉ.वी.कृपा, अध्यक्ष, एफ ई एम प्रभाग, सी एम एफ आर आइ ने कृतज्ञता अदा की.

करीब सात महीनों में प्राप्त उच्च लाभ के प्रति श्री बाबु के नेतृत्व के किसान लोगों ने बडी संतुष्टि प्रकट की.

(इमेल्डा जोसफ, समुद्री संवर्धन प्रभाग, कोचीन की रिपोर्ट)

मल्लट मछली संग्रहण के प्रथम खींच का दृश्य

माननीय सांसद श्री आनन्दकुमार हेगडे भाषण देते हुए

"उत्तर कन्नड जिला का एकीकृत विकास" पर राष्ट्रीय परामर्श कार्यक्रम

डॉ.एस.अय्यप्पन, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक

श्रीमती इमकोंगला जमीर उप आयुक्त, उत्तर कन्नड जिला

डॉ. बी.मीनाकुमारी डी डी जी (मात्स्यिकी) भा कृ अनु प

उत्तर कन्नड जिला में मात्स्यिकी, कृषि, उद्यान कृषि, फूल कृषि, पशुपालन और मुर्गी पालन का उत्पादन बढ़ाने के लिए एक साकल्यवादी अभिगम तैयार करने के उद्देश्य से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सहयोग से श्री आनन्दकुमार हेगडे, माननीय सांसद, उत्तर कन्नड जिला द्वारा कारवार में " उत्तर कन्नड जिला का एकीकृत विकास" विषय पर राष्ट्रीय परामर्श कार्यक्रम आयोजित किया गया.

इस तरह का कार्यक्रम भारत में ही पहली बार आयोजित किया जा रहा है. डॉ.एस. अय्यप्पन, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा कृ अनु प ने 1 सितंबर 2012 को उत्तर कन्नड जिला के कारवार में श्री आनन्दकुमार हेगडे, माननीय सांसद, श्रीमती इमकोंगला जमीर, उप आयुक्त, उत्तर कन्नड जिला, डॉ. बी.मीनाकुमारी, डी डी जी (मात्स्यिकी), भा कृ अनु प, डॉ.मदन मोहन, सहा. महानिदेशक (समुद्री मात्स्यिकी), डॉ. आर.आर. हांचिनाल, कुलपति, कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, धारवाड़, डॉ.जी.सैदा रावु, निदेशक, केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, डॉ.ए.जी.पोन्नय्या, निदेशक, सी आइ बी ए, डॉ.टी.के.श्रीनिवास गोपाल, निदेशक, सी आइ एफ टी, डॉ.ए.एस.सिधु, निदेशक, आइ आइ एच आर, डॉ.जोर्ज वी. तोमस, निदेशक, सी पी सी आर आइ, डॉ.सी. एस. प्रसाद, निदेशक, एन आइ ए एन पी, डॉ.आनन्द राज, निदेशक, आइ आइ एस आर, डॉ.सतीश कुलकर्णी, समायोजक, एन डी आर आइ, श्री गंगाधरा वी. मडिक्केरी, संयुक्त मात्स्यिकी निदेशक, कर्नाटक सरकार, डॉ.हेमंत हेगडे, कार्यक्रम समायोजक, कृ वि कें, सिरसी तथा राज्य कृषि विश्वविद्यालयों और संस्थानों के अध्यक्षों एवं कर्मचारी सदस्यों की उपस्थिति में कार्यक्रम का उद्घाटन किया. डॉ.एस. अय्यप्पन, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा कृ अनु प ने मुख्य भाषण दिया और सी एम एफ आर आइ द्वारा प्रकाशित " भारत की समुद्री स्तनी जातियाँ" विषयक पुस्तक का विमोचन किया.

डॉ.हेमंत हेगडे, कार्यक्रम समायोजक, कृ वि कें, सिरसी द्वारा जिला की अनुसंधान एवं विकास की जरूरतों पर प्रकाश डालते हुए चर्चाएं शुरू के गयी. श्री गंगाधरा वी. मडिक्केरी, संयुक्त मात्स्यिकी निदेशक, कर्नाटक सरकार ने मात्स्यिकी सेक्टर में अनुसंधान एवं विकास की जरूरतों पर प्रस्तुतीकरण किया. इस के बाद मात्स्यिकी संस्थानों के निदेशकों ने अपनी प्रतिक्रिया प्रकट की. बाद में भा कृ अनु प के निदेशकों और राज्य सरकार के अधिकारियों द्वारा प्रस्तुतीकरण हुआ और इस के बाद उत्तर कन्नड जिला के विकास के लिए लागू की जाने की प्रौद्योगिकियों पर चर्चा भी हुई. भा कृ अनु प और अन्य संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों के निदेशकों द्वारा किए गए प्रस्तुतीकरण और चर्चाओं के आधार पर सिफारिशों का प्रस्ताव किया और समिति द्वारा स्वीकृत किया गया. डॉ.एस. अय्यप्पन, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा कृ अनु प ने उत्तर कन्नड के एकीकृत कृषि विकास के लिए 'उत्त्रान' विषयक नई परियोजना की घोषणा की. उन्होंने यह घोषणा भी की कि निदेशक, सी एम एफ आर आइ इस परियोजना के आयोजक और कुलपति, कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, धारवाड़ समायोजक होंगे. परियोजना से संबंधित सभी सदस्यों के साथ

आगे और भी चर्चा करने के बाद परियोजना पर पूर्ण रूप दिया जाएगा.

राष्ट्रीय परिचर्चा शाम को 06 00 बजे समाप्त हुई.

अगला दिन बडे सबेरे को डॉ.के.के. फिलिप्पोस, प्रभारी वैज्ञानिक, कारवार अनुसंधान केंद्र ने माननीय सांसद और अन्य विशिष्ट व्यक्तियों को समुद्री पिंजरों का मुआइना करने का प्रबंधन किया. सभी महान व्यक्तियों को समुद्री प्लवमान पिंजरे और इनमें पालन की जाने वाली विभिन्न मछली जातियों को देखने का अवसर मिला.

विशिष्ट व्यक्तियों और सहभागियों का दृश्य

कारवार अनुसंधान केंद्र के नए प्रयोगशाला एवं कार्यालय भवन का उद्घाटन

डॉ.एस. अय्यप्पन, महानिदेशक, भा कृ अनु प परंपरागत दीप जलाते हुए

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के कारवार अनुसंधान केंद्र के नवीकरण किए गए इमारत का उद्घाटन 2 सितंबर 2012 को डॉ.एस. अय्यप्पन, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा कृ अनु प द्वारा डॉ.बी.मीनाकुमारी, उप महानिदेशक (मात्स्यिकी) एवं डॉ.मदन मोहन, सहायक महानिदेशक (समुद्री मात्स्यिकी), डॉ. जी.सैदा रावु, निदेशक, सी एम एफ आर आइ, डॉ.के.के.फिलिप्पोस, प्रभारी वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ कारवार अनुसंधान केंद्र और कारवार अनुसंधान केंद्र के अन्य कर्मचारी सदस्यों की उपस्थिति में किया गया. उद्घाटन कार्यक्रम में डॉ.ए.पी.दिनेश बाबु, प्रभारी वैज्ञानिक, मांगलूर अनुसंधान केंद्र एवं केंद्र के अन्य कर्मचारी सदस्य, डॉ.एन.पी.सिंह, निदेशक, भा कृ अनु प समुच्चय, गोवा, डॉ.सी.एस.प्रसाद, निदेशक, एन आइ ए एन पी बांगलूर, सी पी डब्लियू डी, मराइन बयोलजी विभाग, कारवार के कार्मिक सदस्य भी उपस्थित थे.

उद्घाटन कार्यक्रम के बाद कर्मचारियों की बैठक आयोजित की गयी जिस में महानिदेशक ने कारवार में अवसंरचना विकासों और अनुसंधान प्रगतियों के लिए किए गए उल्लेखनीय प्रयासों पर निदेशक, सी एम एफ आर आइ और प्रभारी वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ कारवार अनुसंधान केंद्र का अभिनन्दन किया. डॉ.बी.मीनाकुमारी ने केंद्र के वैज्ञानिकों और कर्मचारियों से यह बताया कि कड़ी मेहनत के लिए कोई विकल्प नहीं है और कारवार अनुसंधान केंद्र में पायी गयी उपलब्धियाँ इसका

डॉ.एस.अय्यप्पन, महानिदेशक शिलाफलक का अनावरण करते हुए

डॉ.बी.मीनाकुमारी, उप महानिदेशक (मा.) रिबन काटने का दृश्य

महानिदेशक कारवार अनुसंधान केंद्र के कर्मचारी सदस्यों के साथ

दृष्टांत है. डॉ.मदन मोहन, सहायक महानिदेशक ने कारवार अनुसंधान केंद्र द्वारा किए गए विकास कार्यों पर संतुष्टि प्रकट की और खुला सागर पिंजरा मछली पालन में राष्ट्रीय स्तर सब से आगे माने का आह्वान दिया. डॉ.के.के.फिलिप्पोस ने कारवार अनुसंधान केंद्र में महानिदेशक के मुआइने के प्रति अपना आभार प्रकट किया. महानिदेशक ने यह सुझाव दिया कि खुला सागर पिंजरा पालन केंद्र का प्रमुख कार्यकलाप होना चाहिए. बैठक के बाद महानिदेशक और प्रमुख व्यक्ति गण ने सी एम एफ आर आइ कारवार अनुसंधान केंद्र के समुद्री स्फुटनशाला समुच्चय और समुद्री पिंजरा खेत का मुआइना किया. डॉ.एस.अय्यप्पन, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा कृ अनु प और अन्य विशिष्ट व्यक्तियों ने सी एम एफ आर आइ कारवार अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिकों, अन्य कर्मचारी सदस्यों एवं कारवार के प्रशिक्षित मछुआरों के साथ बातचीत की.

महानिदेशक कारवार अनु. केंद्र के कर्मचारियों और प्रशिक्षित मछुआरों के साथ

महानिदेशक, भा कृ अनु प द्वारा सी एम एफ आर आइ पुस्तक "भारत की समुद्री स्तनी जातियाँ" का विमोचन

पुस्तक विमोचन का दृश्य

डॉ.एस.अय्यप्पन, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा कृ अनु प ने कारवार में 'उत्तर कन्नड जिला का एकीकृत विकास' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय परामर्श कार्यक्रम में सी एम एफ आर आइ पुस्तक 'भारत की समुद्री स्तनी जातियाँ' का विमोचन किया.

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने पूरे भारतीय तट पर स्थित अनुसंधान एवं क्षेत्र केंद्रों के प्रशिक्षित कार्मिकों की सहायता से पिछले 50 वर्षों के दौरान कभी कभी होने वाले समुद्री स्तनियों के धंसन, दर्शन और गिअरों में फँसाना आदि सूचनाओं का संग्रहण करके प्रकाशन किया. भारत के समुद्री स्तनियों पर प्रकाशित 85% पुस्तकें सी एम एफ आर आइ द्वारा प्रकाशित की जाती हैं. भारतीय समुद्रों में पाए जाने वाले समुद्री स्तनियों के बारे में छात्रों, अनुसंधानकारों, प्रकृतिविशारदों और परिरक्षणकारों के बीच अवगाह जगाने के उद्देश्य से सी एम एफ आर आइ के वैज्ञानिक गण डॉ.ई. विवेकानन्दन और डॉ.आर. जयभास्करन ने समुद्री स्तनी जातियों पर रूपरेखा तैयार की है जो इन आकर्षक जीवों पर मूलभूत और रोचक सूचनाएं प्रदान करती है. उन्होंने समुद्री स्तनियों पर अनुसंधान परियोजनाओं के परिणाम प्रस्तुत किए हैं और इस क्षेत्र के सभी प्रक्रिया साहित्य में उपलब्ध सारी सूचनाएं इकट्ठा की है ताकि यह प्रकाशन समुद्री स्तनियों पर अभिरुचि होने वाले व्यक्तियों को एक संदर्भ ग्रंथ के रूप में उपयुक्त किया जा सकता है.

महानिदेशक का कारवार के समुद्री पिंजरा खेत में मुआइना

महानिदेशक समुद्री पिंजरा पालन खेत में

श्री आनन्द कुमार हेगडे, सांसद संग्रहित मछली का निरीक्षण करते हुए

डॉ.एस.अय्यप्पन, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा कृ अनु प, डॉ.बी.मीनाकुमारी, उप महानिदेशक (मात्स्यिकी) और डॉ.मदन मोहन, सहायक महानिदेशक (समुद्री मात्स्यिकी), डॉ.जी.सैदा रावु, निदेशक, सी एम एफ आर आइ, डॉ.एन.पी.सिंह, निदेशक, भा कृ अनु प अनुसंधान समुच्चय, गोवा, डॉ.सी.एस.प्रसाद और निदेशक, एन आइ ए एन पी, बांगलूर ने डॉ.के.के.फिलिप्पोस, प्रभारी वैज्ञानिक, कारवार अनुसंधान केंद्र, डॉ.ए.पी.दिनेश बाबु, प्रभारी वैज्ञानिक, मांगलूर अनुसंधान केंद्र तथा सी एम एफ आर आइ के कारवार एवं मांगलूर अनुसंधान केंद्र के कर्मचारी गण के साथ सी एम एफ आर आइ कारवार अनुसंधान केंद्र के समुद्री पिंजरा खेत का मुआइना किया.

डॉ.के.के.फिलिप्पोस ने कारवार में खुला सागर पिंजरा मछली पालन में प्राप्त सफलता के बारे में विवरण दिया और पिंजरों में पालित विभिन्न प्रकार की मछली जातियों को महानिदेशक को दिखाया और इनके नर्सरी पलन के लिए उपयुक्त विभिन्न नयाचार पर भी विवरण दिया. उन्होंने कारवार में रूपाइत और विकसित तथा निर्माण में 70% लागत का लाभ होने वाले जी आइ पिंजरा भी महानिदेशक को दिखाया. कारवार अनुसंधान केंद्र में अब 20 पिंजरों में कुल पांच जाति मछलियाँ याने कि कोबिया, समुद्रीबास, स्नापेर्स, समुद्री ब्रीम्स और पोम्पानो का पालन किया जा रहा है.

डॉ.एस.अय्यप्पन ने वैज्ञानिकों को भारत में खुला सागर पिंजरा मछली पालन के क्षेत्र में सी एम एफ आर आइ को और भी आगे बढ़ाने के लिए कठिन प्रयास करने का आह्वान किया.

महानिदेशक, भा कृ अनु प एवं अन्य विशिष्ट व्यक्ति गण मछली संग्रहण का निरीक्षण करने का दृश्य

डॉ.चरण दास महन्त, माननीय कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री का मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में मुआइना

माननीय कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री डॉ.चरण दास महन्त ने 20 जून 2012 को सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र का मुआइना किया और केंद्र की चालू अनुसंधान गतिविधियों का निरीक्षण किया. उन्होंने वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की और संग्रहालय, जलजीवशाला और स्फुटनशाला का मुआइना किया.

◀ डॉ.चरण दास महन्त, माननीय कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री जलजीवशाला का मुआइना करते हुए

डॉ.चरण दास महन्त, माननीय मंत्री संग्रहालय का मुआइना करते हुए

माननीय मंत्री अलंकारी मछली स्फुटनशाला का मुआइना करते हुए

आंध्रा प्रदेश के नागयलंका में एशियन समुद्री बास मछली संग्रहण मेला

निदेशक, सी एम एफ आर आइ संग्रहित मछली का निरीक्षण करते हुए

आंध्रा प्रदेश के कृष्णा जिला में 11 अगस्त 2012 को डॉ.जी.सैदा रावु, निदेशक, सी एम एफ आर आइ, डॉ.कृष्णप्रसाद, प्रधानाचार्य, मात्स्यिकी पोलीटेकनिक कॉलेज, नागयलंका और सी एम एफ आर आइ विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र के कर्मचारी सदस्यों की उपस्थिति में एशियन समुद्री बास मछली का फसल संग्रहण मेला आयोजित की गयी. पिंजरे में एशियन समुद्री बास मछली का संभरण करके चार महीने तक पालन किया और नदीमुख में भाड़ का पानी प्रवेश करने से पहले बाहिश के मौसम में फसल संग्रहण किया गया. संग्रहित मछली का औसत आकार 0.59 से 1.1 कि.ग्रा. था जो इस क्षेत्र में इस मछली के पालन की शक्यता पर संकेत करता है. इस अवसर पर किसान मेला भी आयोजित की गयी थी जिसमें मछुआरों के प्रश्नों का निदेशक, सी एम एफ आर आइ और सहायक मात्स्यिकी निदेशक, कृष्णा जिला ने उत्तर दिया.

खुला सागर पिंजरा मछली पालन

रामनाथपुरम के वेतालै में पोम्पानो मछली के पिंजरा पालन में कारीगरी नवीकरण

तमिल नाडु के रामनाड जिला के वेतालै गाँव के स्थानीय मछुआरा श्री रागदोस को स्फुटनशाला में उत्पादित पोम्पानो मछली के लगभग 1250 अंगुलिमीन प्रदान किए गए. प्रारंभिक रूप से उन्होंने मछली संततियों को महाचिंगट के वजन बढ़ाव के लिए स्वयं रूपायित कारीगरी पेन में डाला था.

यह आकलन किया गया था कि पोम्पानो मछली संभरण के लिए उपयुक्त पेन आदिकालीन था और तीन महीनों की अवधि में इस में संभरण किए गए लगभग 700 अंगुलिमीनों की मृत्यु हुई. इसके बाद मंडपम क्षेत्रीय केंद्र की सहभागिता से कारीगरी पिंजरा मछली पालन की योजना बनायी. इस तरह केंद्र में सजाए गए 6x6 मीटर के बाहरी व्यास और 5x5 मीटर के आंतरकि ढांचे के व्यास में 50 मि.मी. जी आइ पाइप से एक कारीगरी पिंजरा रूपाइत किया गया था. इस पिंजरे का 1 मार्च 2012 को जलायन किया और इसमें पोम्पानो मछली के 518 अंगुलिमीनों को स्थानांतरित किया गया. खाद्य के रूप में दिन में एक बार पेलेट आहार दिया गया.

दिनांक 25 जुलाई 2012 को पिंजरे से पोम्पानो मछली का संग्रहण किया गया. कुल 92 कि.ग्रा. भार की मछलियों का संग्रहण किया और मछली का आकार परास 16 से 32 से.मी. की लंबाई और 62 से 433 ग्राम भार आकलित किया गया.

सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में सजाया गया पिंजरा

मछली संग्रहण का दृश्य

डॉ.जी.गोपकुमार, प्रभारी वैज्ञानिक नवोन्मेषी मछुआरा श्री नागदोस को संग्रहित मछलियों को प्रदान करते हुए

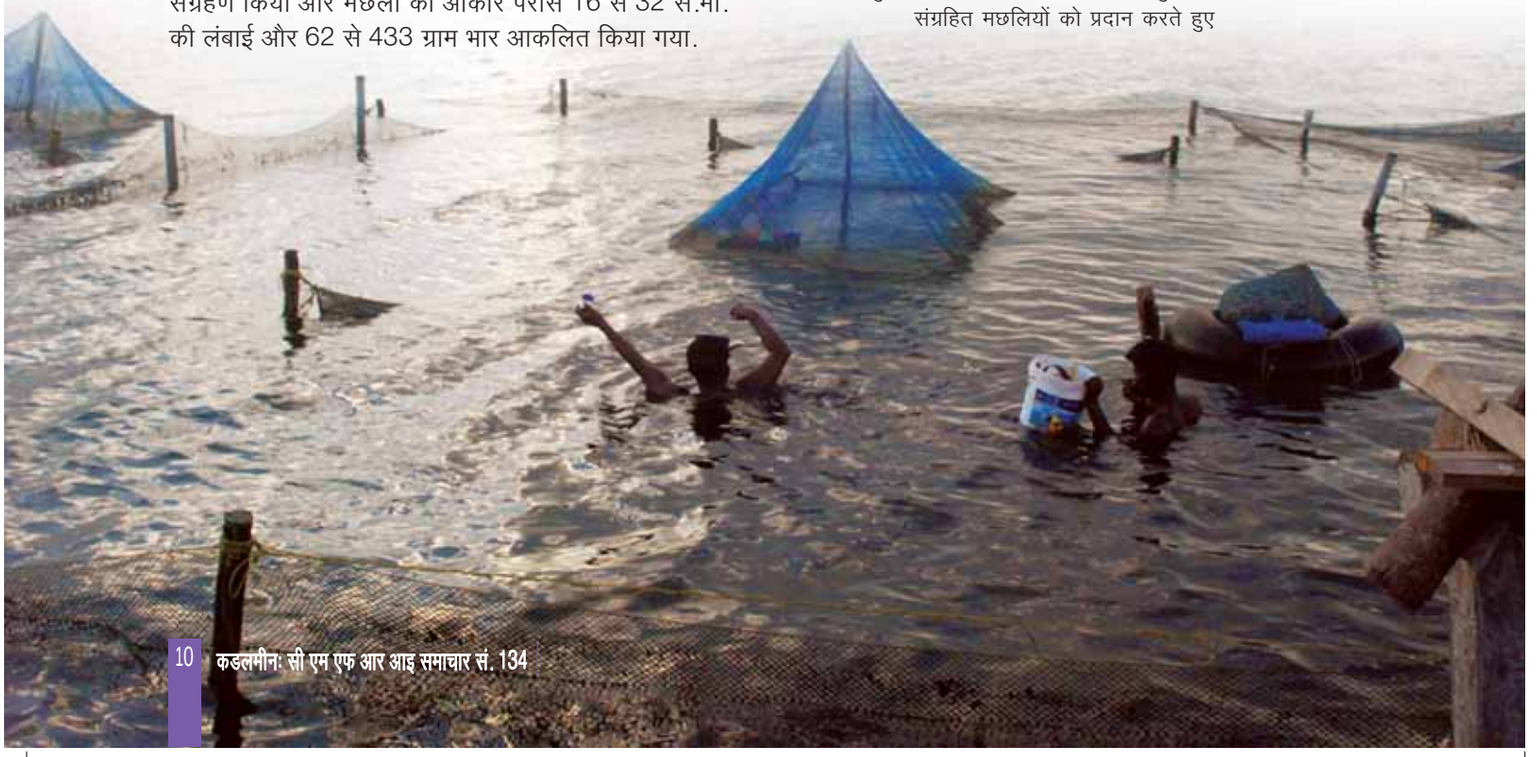

डॉ.जी.गोपकुमार, प्रभारी वैज्ञानिक ने नवोन्मेषी मछुआरा श्री नागदोस को संग्रहित मछलियों को प्रदान किया. संग्रहित पोम्पानो मछली का खेत में मूल्य 120/ कि.ग्रा. था और विपणनकार ने बाज़ार में प्रति किलो ग्राम के लिए 180 रुपए की दर में बेच दिया.

मछली संग्रहण के दौरान प्रभारी वैज्ञानिक ने समुद्री पिंजरों और तालाबों में पोम्पानो और कोबिया मछली पालन के बारे में अवगाह दिया. संग्रहण कार्यक्रम में कुल 40 मछुआरों ने भाग लिया. यह लघु पैमाने का निदर्शन कार्यक्रम होने पर भी इस से उसी क्षेत्र के कई मछुआरों के बीच इस तरह के कारीगरी पिंजरा मछली पालन की और बडी अभिरुचि हुई.

(जी.गोपकुमार, ए.के.अब्दुल नाज़र, आर.जयकुमार, जी.तमिलमणी, एम.शक्तिवेल, सी.कालिदास, पी.रमेश कुमार और जोनसन बी., मंडपम क्षेत्रीय केंद्र की रिपोर्ट)

डॉ.जी.गोपकुमार मछुआरों का संबोधन करते हुए

कोच्ची के खुला सागर में अंडशावक विकास एकक का जलायन

सी एम एफ आर आइ ने केरल में कोच्ची के निकट कन्डक्कडव क्षेत्र में स्थानीय मछुआरों की कारीगरी या यंत्रीकृत मत्स्यन गतिविधियों को प्रभावित नहीं करते हुए अंडशावक विकास एकक स्थापित किया. इस एकक में 1.5 ” के जी आइ पाइप (ख श्रेणी) से निर्मित 6 मी. के व्यास में एक वृत्ताकार मछली पालन एकक और 6x3 मीटर की चतुष्कोणीय छोटी प्रयोगशाला सम्मिलित थी. एकक में मराइन प्लाइवुड में रेसिन आवरण के साथ सुदृढ़ प्लाटफोम बनाया जिस में सुरक्षित रूप से खडे होकर अनुसंधानकार ब्रूडस्टॉक का अनुरक्षण, जाल की सफाई, जाल बदलना आदि कार्य आसानी से कर सकते हैं. सिमेन्ट ब्लोकों को धातु के जंजीर के साथ जी आइ संरचना में बांधकर एकक को लंगर कर दिया गया. प्रमुख ब्लोक को जी पी आर एस उपयुक्त करके प्रलेखित और वृत्ताकार प्लवों से इनका संकेत किया जाता है. चार प्लवों से शॉक अब्सोर्बर लगाया गया है. इस एकक का संकेत देने के उद्देश्य से रात को रोशनी देने की सुविधा भी सजायी गयी है.

(के.मधु और रमा मधु, समुद्री संवर्धन प्रभाग, सी एम एफ आर आइ, कोच्ची)

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में कोबिया मछली का सातवां प्रजनन और डिंभक उत्पादन

सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में किए गए कोबिया मछली के छः प्रजनन की सफलता के परिणामस्वरूप 27 जून 2012 को सातवां अंडजनन और डिंभक उत्पादन किया जा सका. इस के लिए उपयुक्त नर मछली क्रमशः 21 और 18 कि.ग्रा. की और मादा मछली लगभग 19 कि.ग्रा. की थी. कोबिया में दिनांक 25 जून 2012 को होर्मोन टीका लगायी गयी. दिनांक 27 जून 2012 को बडी सुबह अंडजनन पाया गया. अंडजनन में कुल 4.95 मिलियन अंड आकलित किए गए और निषेचन की प्रतिशतता 95.2 थी. स्फुटन की दर 66.3 प्रतिशत थी. कोबिया के नए स्फुटित कुल 3.28 मिलियन डिंभकों में से 0.48 मिलियन डिंभकों को लार्वीकल्चर के लिए उपयुक्त किया गया और बाकि 2.81 मिलियन कोबिया डिंभकों का 29 जून 2012 को समुद्र रैंचन किया गया. नए स्फुटित डिंभकों का हरित जल और आवश्यक मात्रा में जीवंत खाद्य होने वाले टैंकों में पालन किया गया. दो महीने की आयु होने वाले इन अंगुलिमीनों के लंबाई और भार क्रमशः 17 से.मी. और 28 ग्राम थे.

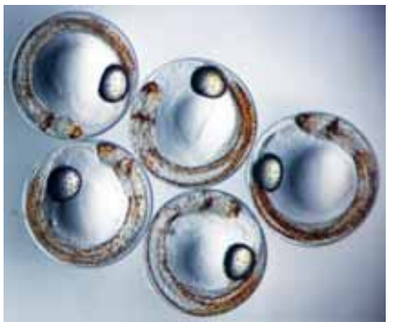

कोबिया का अंड विकास

कोबिया का दो महीने की आयु का अंगुलिमीन

अंगुलिमीन पालन पिंजरे में डालने के लिए तैयार

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र से काबिया अंगुलिमीनों का वेरावल और कारवार तक परिवहन

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र से 9 अगस्त 2012 को कोबिया मछली के 7.3 से.मी. की औसत लंबाई वाले लगभग 1250 अंगुलिमीनों को वायुयान द्वारा सी एम एफ आर आइ वेरावल क्षेत्रीय केंद्र को परिवहन किया गया.

दिनांक 19 अगस्त 2012 को कोबिया मछली के 9.6 से.मी. की औसत लंबाई वाले लगभग 2800 अंगुलिमीनों को रोड मार्ग से सी एम एफ आर आइ कारवार अनुसंधान केंद्र को परिवहन किया गया.

कोबिया अंगुलिमीनों का परिवहन

रेड स्नाप्पर मछली का पिंजरा पालन - मांगलूर अनुसंधान केंद्र से सफलता की कहानी

सी एम एफ आर आइ मांगलूर अनुसंधान केंद्र द्वारा उडुप्पी जिला के कुन्दापुरा तालुक के उप्पुन्डा गाँव में लगाए गए पिंजरों में रेड स्नाप्पर मछली, *लूटजानस अरजेन्टिमाकुलाटस* के प्रग्रहण पर आधारित जलकृषि का सफल रूप से निदर्शन किया गया. लगभग 2x4x4 मीटर क्षेत्र होनेवाले पिंजरे में नवंबर 2011 के तीसरे हफ्ते के दौरान नदीमुख से संग्रहित 80 से 100 ग्राम आकार होने वाले 500-600 मछलियों को डाला गया. नदीमुख में कुल 13 पिंजरे सजाकर इनका अनुरक्षण किया गया. आठ महीनों की अवधि के बाद 50% मछलियों का संग्रहण किया गया. तब मछलियाँ 650 से 900 ग्राम के आकार तक बढ़ गयीं. संग्रहित मछलियों को स्थानीय बाज़ार में प्रति किलोग्राम को 280 रुपए की दर में बेच दिया गया.

पिंजरों से संग्रहित रेड स्नाप्पर मछलियों का दृश्य

उप्पुन्डा के पिंजरे से संग्रहित मछलियों का दृश्य

वैज्ञानिकों द्वारा आंध्रा प्रदेश के राजुललंका में कोबिया निदर्शन खेत का अनुवीक्षण

डॉ.ए.के.अब्दुल नाज़र, वरिष्ठ वैज्ञानिक और डॉ.आर.जयकुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र ने दिनांक 14 जून 2012 को वेस्ट गोदावरी जिला के नर्सापुर के निकट राजुललंका के कोबिया निदर्शन खेत का मुआइना किया और कोबिया के अंगुलिमीनों के पालन के दौरान दिखायी पडी मर्त्यता समस्याओं के बारे में मछुआरे श्री वासु और श्री सुब्बराजु के साथ चर्चा की. मछुआरों ने कोबिया मछली पालन आगे भी करने की उत्सुकता प्रकट की. कोबिया के अंगुलिमीन (करीब 350) लगभग 100 ग्राम भार तक बढ़ गए और पालन कार्य जारी किया जा रहा है. इसके बाद वैज्ञानिकों ने वेस्ट गोदावरी जिला के अक्किवीडु के निदर्शन खेत का मुआइना किया और खेत प्रबंधक श्री मुरली के साथ बातचीत की. यहाँ के पालन खेत में लगाए गए दो पेनों में 220 ग्राम के औसत आकार वाले लगभग 1200 पोम्पानो मछलियों का पालन किया जा रहा है. पालन खेत की लवणता करीब 2 पी पी टी थी. मछलियों को खाने के लिए सी.पी.अक्वाकल्चर इंडिया प्राइवेट लिमिटड द्वारा पूर्ति किए गए एक्स्ट्रूडड फ्लोटिंग पेल्लट खाद्य दिया गया. खेत की लवणता बहुत कम होने की वजह से मछलियों की बढ़ती भी कम देखी गयी.

वेस्ट गोदावरी जिला के निदर्शन खेत में कोबिया अंगुलिमीनों को आहार देने का दृश्य

पोम्पानो मछली और पृष्ठभूमि में पेन का दृश्य

(डॉ.जी.गोपकुमार, ए.के.अब्दुल नाज़र, आर.जयकुमार, जी.तमिलमणी, एम.शक्तिवेल, सी.कालिदास, पी.रमेश कुमार और जोनसन बी. मंडपम क्षेत्रीय केंद्र की रिपोर्ट)

विषिंजम अनुसंधान केंद्र में डिज़ाइनर मोती का लघु पैमाने में वाणिज्यीकरण

डिज़ाइनर मोतियों का दृश्य

डिज़ाइनर मोती युक्त आभूषण

विषिंजम अनुसंधान केंद्र में उत्पादन के लघु पैमाने एककों की साध्यताओं का परीक्षण करने के उद्देश्य से अन्य अनुसंधान कार्यों के साथ साथ डिज़ाइनर मोतियों का लघु पैमाने में वाणिज्यिक उत्पादन शुरू किया गया. डिज़ाइनर मोती के उत्पादन के लिए देशीय रूप से उत्पादित मोती केंद्रक उपयुक्त किया जाता है. डिज़ाइनर मोती उत्पादन के लिए मुख्यतः *पिंक्टाडा फ्यूकेटा* और *पी.सुगिलेटा* नामक दो मोती जातियों का उपयोग किया जाता है. गुणतायुक्त मोतियों की उत्पादन दर 20 से 30% थी. उत्पादित मोतियों को गुणता के आधार पर प्रति मोती को 1000 से 5000 रुपए की दर में बेच दिया गया. केंद्र में आने वाले स्थानीय लोग और आगंतुक डिज़ाइनर मोती और आभूषणों पर बडी अभिरुचि प्रकट करते हैं.

मोती उत्पादन से स्थानीय समुदायों के लोगों को आय जगाने का अवसर प्राप्त होता है. छोटे परिवार पर आधारित या सहकारी या सामुदायिक आधार पर मोती उत्पादन का प्रारंभ किया जा सकता है और लोग इस में कई स्तरों पर जैसे शुक्ति उत्पादन, डिज़ाइनर मोती उत्पादन, आधा मोती या वृत्ताकार मोती के उत्पादन के लिए इस उद्यम में आ सकते हैं या वे प्राकृतिक स्थानों से किशोर शुक्तियों (स्पैटों) का संग्रहण करके मोती उत्पादन में केंद्रक रोपण करने योग्य आकार तक बढ़ा सकते हैं. इन गतिविधियों से महिलाओं को रोज़गार का अवसर प्राप्त होता है और विभिन्न प्रकार के कम आमदनी वाले लोगों को आय जगाने का अवसर भी मिल जाता है.

(एम.के.अनिल, सी एम एफ आर आइ विषिंजम अनुसंधान केंद्र की रिपोर्ट)

मंडपम में कोबिया का पिंजरा पालन

सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में स्फुटनशाला में उत्पदित अंगुलिमीनों को उपयुक्त करके पिंजरों में कोबिया मछली का पालन किया जा रहा है. अंगुलिमीनों का नर्सरी पालन करने के बाद अगस्त 2012 के अंतिम सप्ताह में पिंजरे में संभरण किया गया. संभरण किए गए अंगुलिमीनों की लंबाई 14 से 19 से.मी. थी और भार 13 से 43 ग्राम था. मछलियों को दिन में दो बार कचरा मछलियों से खिलाया गया.

तमिल नाडु के कन्याकुमारी जिला के मुट्टम मत्स्यन पोताश्रय में रे मछली और स्केट्स की असाधारण भारी पकड़

तमिल नाडु के कन्याकुमारी जिला के मुट्टम मत्स्यन पोताश्रय में जून-जुलाई 2012 के दौरान परंपरागत मछुआरों को बडी मात्रा में रे मछली और स्केट्स को प्राप्त हुआ. रे मछली के शरीर भार का परास 0.9 से 1.5 कि.ग्रा. और स्केट्स का 2.5 से 4.0 कि.ग्रा. था. प्रति दिन की औसत पकड़ 6.0 टन आकलित की गयी. एक हफ्ते के दौरान हुई रे मछली और स्केट्स की 42.0 टन की भारी पकड़ से प्रति किलो ग्राम के लिए 58/- रुपए की दर में कुल 24,36,000/- रुपए का राजस्व प्राप्त हुआ. रे मछली और स्केट्स को प्लास्टिक ट्रे में पिसाए गए बर्फ में रखकर विपणन के लिए परिवहन किया गया. पकड़ का सिंह भाग (लगभग 85.0%) बर्फ लगाकर स्टॉक करके अच्छी दाम में केरल के पडोसी राज्यों में परिवहन करके बेच दिया गया. बची गयी पकड़ थोक व्यापारियों द्वारा टूटिकोरिन और कोलचल के स्थानीय बाज़ारों में ले गयी.

रे मछली अवतरण केंद्र में पैकिंग करने से पहले रे मछलियों का दृश्य

(ए.उदयकुमार, एच.जोस किंगसली, वी.विश्वनाथन, रचना मोल आर.एस. और ए.पी.लिप्टन, विषिंजम अनुसंधान केंद्र की रिपोर्ट)

मांगलूर अनुसंधान केंद्र में सुरा की पकड़

मांगलूर मत्स्यन पोताश्रय में 3 सितंबर 2012 को कांटा डोर परिचालन करने वाले स्टील यानों द्वारा 1000 किलो ग्राम *कारकारिनस लिम्बाटस* को पकड़ा गया. तट रेखा से 50 कि.मी. की दूरी से लगभग 50 से 110 कि.ग्रा. भार वाली तीस सुरा मछलियों को पकड़ा गया. ये यान कर्नाटक में पंजीकृत होने पर भी लगभग 21 - 30 रातों तक भारत के पश्चिम तट पर परिचालन करके अच्छे बाज़ार भाव के लिए उत्तर भारत के राज्यों जैसे गुजरात और महाराष्ट्र में पकड़ का अवतरण करते हैं. पकड़ में सुराओं के अतिरिक्त स्केट्स (600 किलो ग्राम), स्वोर्डफिश (400 कि.ग्रा.) और अन्य मछली ग्रुप जैसे सुरमई, बाराकुडा *एम.कोरडाइला* भी छोटी मात्रा में प्राप्त हुई और इन सब का कुल राजस्व 5.5 लाख रुपए था. इस अवधि के दौरान अरब सागर में हुई तूफानी मौसम की वजह से मांगलूर मत्स्यन पोताश्रय में इन संपदाओं की पकड़ में घटती हुई और मत्स्यन परिचालन की अवधि भी 10 रात तक घट की गयी.

मांगलूर मत्स्यन पोताश्रय में सुराओं की भारी पकड़ का दृश्य

केरल के कासरगोड में समुद्री बास का सफल संग्रहण

एस एच जी और मत्स्यफेड, कासरगोड द्वारा किया गया फसल संग्रहण

केरल के कासरगोड जिला के मत्स्यफेड ने आर के वी वाइ कार्यक्रम के अंदर कासरगोड के नदीमुखों में समुद्री बास मछली पालन शुरू किया. मत्स्यफेड के लिए सी एम एफ आर आइ मांगलूर अनुसंधान केंद्र द्वारा समुद्री बास मछली के पिंजरा पालन पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया. कासरगोड के उप्पुन्डा संकरी खाडी में स्थापित करने के अनुरूप पिंजरों का रूपायन किया गया जो कर्नाटक मछुआरों ने स्वीकार किया था. कर्नाटक में किए गए लघु पैमाने पिंजरा मछली पालन की सफलता से केरल के पडोसी राज्यों के मछुआरों में इस के प्रति अभिरुचि हुई है. सात स्वयं सहायक संघों के लिए प्रशिक्षण आयोजित किया गया. नदीमुख के पिंजरा मछली पालन के लिए 2मी. x 2मी. x 2मी. आकार के पिंजरों का रूपायन करके समुद्री बास मछली के 200 से 300 संततियों का संभरण किया गया. हर एक ग्रुप के पास इस तरह के छः पिंजरे थे. इन पिंजरों से जुलाई 2011 में प्रथम फसल संग्रहण किया गया और इस में हुई सफलता से प्रेरित होकर आगामी वर्ष (2012) में भी मछली पालन जारी किया गया और जुलाई 2012 के दौरान दूसरा फसल संग्रहण आयोजित किया गया. पालन अवधि छः महीने की थी और औसत 450 कि.ग्रा. मछलियों का संग्रहण किया गया. प्रति ग्रुप को फसल मछली संग्रहण से करीब 99,000/- रुपए का आय प्राप्त हुआ.

सी एम एफ आर आइ में हिन्दी चेतना मास समारोह

सी एम एफ आर आइ मुख्यालय, कोचीन में 01 से 28 सितंबर 2012 तक विभिन्न कार्यक्रमों से हिंदी चेतना मास मनाया गया. इस दौरान संस्थान के कर्मचारी सदस्यों के बीच हिंदी में काम करने की प्रेरणा जगाने के लिए शब्द शक्ति विकास, टिप्पण एवं आलेखन, अनुवाद, ई गवेर्नन्स, ललित गान, वार्तालाप आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी. दिनांक 1 सितंबर 2012 को बोलचाल की हिन्दी विषय पर कार्यशाला के आयोजन से हिन्दी चेतना मास का उद्घाटन किया गया.

सी एम एफ आर आइ के सभी क्षेत्रीय एवं अनुसंधान केंद्रों में विभिन्न कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं के साथ हिंदी दिवस / सप्ताह / पखवाड़ा आयोजित किया गया.

उद्घाटन सभा का दृश्य. मुख्य अतिथि प्रोफसर डॉ.के.वी.मुरलीधरन पिल्लै डॉ.वी.कृपा और श्री राकेश कुमार, मु.प्र.अ. के साथ

हिन्दी चेतना मास 2012 का रंगीन समापन

सी एम एफ आर आइ कोच्ची में दिनांक 01 सितंबर को शुरू किए गए हिन्दी चेतना मास का रंगीन शुभांत दिनांक 28.09.2012 को हुआ. इस दौरान देश की सांस्कृतिक विरासत और वैश्विक सद्भाव का संदेश देते हुए सी एम एफ आर आइ के कर्मचारी सदस्यों द्वारा अत्यंत रंगीन और आकर्षक *नाट्य* प्रस्तुत किया गया.

हिन्दी चेतना मास की समापन सभा दिनांक 28.09.2012 को आयोजित गयी जिस में निदेशक, सी एम एफ आर आइ अध्यक्ष और श्री आर.सी.सिन्हा, निदेशक, केंद्रीय मत्स्य नौचालन इंजिनीयरी प्रशिक्षण संस्थान मुख्य अतिथि रहे. संस्थान में पूरे वर्ष और मास के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि ने पुरस्कार प्रदान किए.

इस अवसर पर 'रीफ में रहने वाली भारत की पर्च मछलियाँ', 'भारत के मृदु प्रवाल और समुद्री फैन' और 'भारत की समुद्री पेनिअइड झींगा संपदाएं' विषयों पर तैयार किए गए द्विभाषी पोस्टरों का विमोचन भी किया गया.

सी एम एफ आर आइ के सभी अधीनस्थ केंद्रों में हिन्दी चेतना मास/ पखवाड़ा / सप्ताह / दिवस मनाया गया.

पोस्टर विमोचन का दृश्य

श्री आर.सी.सिन्हा, निदेशक, सिफनेट, कोचीन उद्घाटन भाषण देते हुए

कर्मचारी सदस्यों का रंगीन नृत्य

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में राजभाषा सप्ताह समारोह

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में दिनांक 14.09.2012 को राजभाषा सप्ताह समारोह का उद्घाटन कमडोर के.एस.अन्परियन, भारतीय नौ सेना, उच्चिपुली ने किया. डॉ.जी.गोपकुमार, प्रभारी वैज्ञानिक ने अध्यक्षीय भाषण पेश किया, डॉ.आर.जयकुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने सभा का स्वागत और श्रीमती एन.गोमती, निजी सचिव ने कृतज्ञता अदा किया.

कमडोर के.एस.अन्परियन, भारतीय नौ सेना, उच्चिपुली दीप प्रज्वलित करने का दृश्य

विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र में हिन्दी सप्ताह

क्षेत्रीय केंद्र में 10 से 15 सितंबर 2012 तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया. प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के साथ हिंदी सप्ताह शुरू हुआ और इसके बाद पूरे सप्ताह में अनुवाद, शुद्ध करो तथा वाद विवाद जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं. केंद्र के सभी कर्मचारियों ने अत्यंत अभिरुचि और उत्साह से प्रतियोगिताओं में भाग लिया.

हिन्दी सप्ताह का समापन कार्यक्रम 15 सितंबर को आयोजित किया गया. श्री पी.वी.पी.आर.साइ, मुख्य प्रबंधक, राजभाषा, हिंदी, एस बी आइ, विशाखपट्टणम मुख्य अतिथि रहे. डॉ.जी.महेश्वरुडू, प्रभारी वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र और डॉ.एस.घोष, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं हिंदी अधिकारी कार्यक्रम में अध्यक्ष रहे. मुख्य अतिथि ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए.

संस्थान की शिकायत समिति का पुनर्गठन

निम्नलिखित सदस्यों के साथ दिनांक 19.09.2012 के प्रभाव से किया गया:

1. डॉ.जी.सैदा रावु, निदेशक, सी एम एफ आर आइ अध्यक्ष
2. डॉ.(श्रीमती) वी.कृपा, अध्यक्ष, एफ ई एम डी, सी एम एफ आर आइ सदस्य
3. श्री राकेश कुमार, मु.प्र.अधिकारी, सी एम एफ आर आइ सदस्य
4. श्री ए.वी.जोसफ, व.वि.ले.अधिकारी, सी एम एफ आर आइ सदस्य
5. डॉ.पी.विजयगोपाल, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ मुख्यालय सदस्य
6. श्री पी.के.हरिकुमार, टी-7-8 (तकनीकी अधिकारी), सी एम एफ आर आइ मुख्यालय सदस्य
7. श्री के.जेराल्ड राजा, उच्च श्रेणी लिपिक, सी एम एफ आर आइ मुख्यालय सदस्य
8. श्री सुनिल रामचन्द्र बंगारे, एस एस एस, सी एम एफ आर आइ मुम्बई अनु. केंद्र सदस्य
9. श्रीमती क्रिस्टीना जोसफ, सहा.प्रशा.अधिकारी (बिल्स एवं नकद) सदस्य सचिव

प्रदर्शनियाँ

गुजरात के वेरावल में आयोजित 'सागर कृषि खेडु मेला' में वेरावल क्षेत्रीय केंद्र की सहभागिता

गुजरात सरकार द्वारा 13.08.2012 को आयोजित 'सागर कृषि खेडु मेला' में सी एम एफ आर आइ वेरावल क्षेत्रीय केंद्र ने भाग लिया. गुजरात के माननीय मुख्य मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने मेला का उद्घाटन किया. मेले में मछुआरों, मत्स्य किसानों, उद्योगकारों, विभिन्न विभागों के मन्य व्यक्तियों, स्कूलों एवं कॉलेजों के छात्रों को मिलाकर करीब 10,000 लोगों ने मुआइना किया. मेले में संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों और प्राप्त उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए और सी एम एफ आर आइ वेरावल क्षेत्रीय केंद्र द्वारा मात्स्यिकी अनुसंधान एवं विकास तथा प्रदान की गयी विभिन्न सेवाओं पर विवरण देने वाले स्टाल सजाया गया.

'सागर कृषि खेडु मेला' में किसानों का मुआइना

- गुजरात के गांधी नगर के महात्मा मंदिर में 3-5 सितंबर 2012 के दौरान 'अग्री - बिसिनस एवं प्रौद्योगिकी का अगला सीमांत - राष्ट्रीय कनवेन्शन' से संबंधित प्रदर्शनी
- कोच्ची के होटल ले मेरिडियन में 12-14 सितंबर 2012 के दौरान 'एमेर्जिंग केरला' से संबंधित प्रदर्शनी

कच्छ जिला के मुन्द्रा में कोस्टल गुजरात पावर लिमिटड (सी जी पी एल) में डॉ.जी.सैदा रावु, निदेशक, सी एम एफ आर आइ का मुआइना

डॉ.जी.सैदा रावु, निदेशक, सी एम एफ आर आइ ने डॉ.के.के.फिलिप्पोस, प्रभारी वैज्ञानिक, कारवार अनुसंधान केंद्र, डॉ.वी.वी.सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, मुम्बई अनुसंधान केंद्र और के.मोहम्मद कोया, प्रभारी वैज्ञानिक, वेरावल क्षेत्रीय केंद्र के साथ कच्छ जिला के मुन्द्रा में कोस्टल गुजरात पावर लिमिटड (सी जी पी एल) का मुआइना किया. यह सी जी पी एल के सामूहिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के भाग के रूप में प्लान्ट के चारों ओर के समुद्र में समुद्र कृषि एवं मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए प्लान्ट की बहने वाली नाली का जल उपयुक्त करने के अनुरूप परियोजना के रूपायन के लिए सी जी पी एल के अनुरोध पर किया गया प्राथमिक मुआइना था. सी जी पी एल कच्छ जिला के मुन्द्रा में स्थापित और टाटा के प्रबंधन में परिचालित 1000 एम डब्लियू का थेर्मल पावर प्लान्ट है और इस के अधीन 7 कि.मी. की लंबाई और 250 मी. की चौडाई की और पूरे वर्ष समुद्र जल बहने वाली नाली है. संस्थान इस नाली में समुद्र कृषि एवं मछली उत्पादन बढ़ाने और प्लान्ट के निकटवर्ती गाँव के मछुआरों के लिए समग्र मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए एक बृहद् परियोजना का रूपायन कर रहा है.

निदेशक और विशेषज्ञ टीम सी जी पी एल का मुआइना करते हुए

डॉ.जी.सैदा रावु, निदेशक सी जी पी एल के विशेषज्ञों के साथ

गुजरात के 'सिदी' आदिवासी जनजातियों के लिए वेरावल क्षेत्रीय केंद्र द्वारा खुला सागर पिंजरा मछली पालन पर प्रशिक्षण एवं अभिव्यक्तीकरण

'सिदी' गुजरात की प्राचीन आदिवासी जनजाति है जिनके पूर्वज आफ्रिका में रहते हैं. गुजरात में ये लोग मुख्यतः जुनगड जिला के तलाला और वेरावल तालुकों में रहते हैं. सी एम एफ आर आइ वेरावल क्षेत्रीय केंद्र के द्वारा जनजाति समुदायों की आजीविका विकास कार्यक्रम के रूप में संस्थान के वर्ष 2012-13 के ट्राइबल सब प्लान (टी एस पी) निधि के अंदर "आदिवासियों के लिए समुद्री पिंजरा मछली पालन खेत की स्थापना" की शुरुआत की गयी है. खुला सागर समुद्र कृषि के क्षेत्र में गुजरात के 'सिदी' आदिवासी लोगों के क्षमता वर्धन के रूप में वेरावल क्षेत्रीय केंद्र ने टी एस पी (एच आर डी) - 2012 के अंदर दिनांक 24.07.2012 से 08.08.2012 तक 21 दिनों का प्रशिक्षण और राष्ट्रीय स्तर के अभिव्यक्ति मुआइना कार्यक्रम आयोजित किया. समुद्री पिंजरा मछली पालन के मूल तत्वों पर समझने और सी एम एफ आर आइ के विभिन्न केंद्रों में समुद्री पिंजरा मछली पालन के स्थान चयन, पिंजरा सामग्री एवं गुणता, पिंजरा सजाना, खेत प्रबंधन आदि विभिन्न पहलुओं पर अनुभव प्राप्त करने के लिए 12 आदिवासियों को चुन लिया. वेरावल क्षेत्रीय केंद्र में प्राथमिक और आधारभूत ज्ञान प्राप्त कराने के बाद उन को पिंजरा मछली पालन के विभिन्न पहलुओं पा अनुभव प्राप्त करने और इस क्षेत्र के विशेषज्ञों के साथ विचार विनिमय करने के उद्देश्य से सी एम एफ आर आइ के कारवार, मंडपम, चेन्नई और सी एम एफ आर आइ मुख्यालय, कोच्ची के प्रमुख समुद्री संवर्धन केंद्रों में ले गया. उन के मुआइने की एक झलक नीचे दी जाती है.

कारवार के मछली पालन खेत में 'सिदी' आदिवासियों के प्रशिक्षण का दृश्य

सिदी आदिवासियों का सी एम एफ आर आइ कारवार अनुसंधान केंद्र में मुआइना

कारवार में तीन दिनों के मुआइने के दौरान केंद्र द्वारा स्थापित पिंजरा मछली खेत में खेत प्रबंधन के सभी पहलुओं जैसे अशन, जाल परिवर्तन, मछली स्वास्थ्य अनुवीक्षण, कोबिया *(राचिसेन्ट्रोन कनाडम)* के अंडशावक प्रबंधन, एशियन समुद्री बास *(लाटस कालकारिफर)* का पिंजरा पालन, पर्यावरणीय प्राचलों के विश्लेषण के लिए नमूना संग्रहण आदि पर अवगाह जगाया गया. इस के अतिरिक्त जी आइ पाइप से पिंजरा निर्माण (जी आइ पाइप मोडना, काटना, जोडना, प्लव और जाल लगाना) आदि पर भी उनको प्रशिक्षित किया गया.

कारवार के पालन खेत में प्रशिक्षणार्थियों का दृश्य

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में मुआइना

प्रशिक्षणार्थियों को मंडपम के समुद्री संग्रहालय, जलजीवशाला और समुद्री अनुसंधान प्रयोगशाला, पर्यावरणीय चेम्बर और अलंकारी मछली स्फुटनशाला का मुआइना कराने के अतिरिक्त पालन व्यवस्थाओं, नर्सरी पालन और अंडशावक पालन खेत में दैनिक रूप से की जाने वाली पालन प्रबंधन गतिविधियों में भाग लेने का अवसर प्रदान किया गया. इसके अलावा उनको स्फुटनशाला में कोबिया मछली संतति

मंडपम के समुद्री शैवाल संवर्धन खेत में प्रशिक्षणार्थी

कोबिया मछली संतति पालन स्थान में प्रशिक्षणार्थी

पालन, अशन, पानी का विनिमय, चारा मछली पालन, स्टॉक मछली पालन आदि कार्यविधियों में भाग लेने का असुलभ अवसर प्राप्त हुआ.

समुद्री शैवालों को प्लवन रैफ्टों में स्टॉक करना, रैफ्ट इस्टाल करना और फसल काट करने के संबंध में भी प्रशिक्षणार्थियों को अवगाह जगाया गया. कारवार, कोच्ची और मंडपम में समुद्री मछली पिंजरा पालन पर सीखे गए पहलुओं के समापन के रूप में प्रभारी वैज्ञानिक ने आपसी पुनरीक्षण सत्र आयोजित किया.

'सिदी' आदिवासी जनजाति संघ सी एम एफ आर आइ वेरावल केंद्र के कर्मचारियों और संकाय सदस्यों के साथ

वेरावल और तलाला आदिवासी गाँवों में आधारभूत सर्वेक्षण

संस्थान द्वारा किए जाने वाले ट्राइबल सब प्लान (टी एस पी) के कार्यान्वयन के सिलसिले में सी एम एफ आर आइ के एस ई ई टी टी प्रभाग द्वारा वेरावल क्षेत्रीय केंद्र के वैज्ञानिकों और तकनीकी कर्मचारियों के सहयोग से अगस्त 2012 के दौरान गुजरात के 'सिदी' आदिवासी जनजाति लोगों की आजीविका और समाज-आर्थिक स्तर पर आधारभूत सर्वेक्षण आयोजित किया गया. एस ई ई टी टी प्रभाग के डॉ.सी.रामचन्द्रन, वरिष्ठ वैज्ञानिक और डॉ.स्वातिलक्ष्मी पी.एस., वैज्ञानिक द्वारा सर्वेक्षण आयोजित किया गया. तलाला और वेरावल तालुकों के गाँवों जहाँ आदिवासी जनसंख्या अधिक है, में सर्वेक्षण आयोजित किया गया.

(सुरेश कुमार मोज्जादा, मोहम्मद कोया के., श्रीनाथ के.आर., ज्ञान रंजन दास, स्वातिप्रियंका सेन, एच.एम.भिन्ट, प्रदीप एस. और षिजु पी., सी एम एफ आर आइ वेरावल क्षेत्रीय केंद्र की रिपोर्ट)

'सिदी' आदिवासी जनजाति लागों के साथ साक्षात्कार

कोच्ची में किसानों के लिए पेर्ल स्पोट मछली पालन पर प्रशिक्षण

सी एम एफ आर आइ, कोचीन के समुद्री संवर्धन प्रभाग ने 8-9 अगस्त 2012 के दौरान इडुक्की जिला के तोडुपुषा के अग्रोन्मुख किसानों के लिए पेर्ल स्पोट (*एट्रोप्लस सुराटेन्सिस*) मछली पालन पर दो दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया. डॉ.षोजी जोसफ, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वयन किया. तोडुपुषा के गांधी जी स्टडी सेन्टर द्वारा प्रशिक्षण आयोजित किया गया. सहभागियों में उसी क्षेत्र के किसान लोग, जलकृषि पालनकार, गृहणी और उद्यमी लोग उपस्थित थे. कुल 45 सहभागियों ने प्रशिक्षण में भाग लिया. उन को सी एम एफ आर आइ, कोचीन, कृ वि केंद्र की स्फुटनशाला और एरणाकुलम जिला के पेर्ल स्पोट पालन खेतों में मुआइना करने का अवसर भी दिया गया.

सहायक निदेशक, कृषि, तोडुपुषा प्रशिक्षण का उद्घाटन करने का दृश्य

डॉ.इमेल्डा जोसफ, वरिष्ठ वैज्ञानिक सहभागियों का संबोधन करती हुई

सी आइ एफ ई के छात्र संकाय सदस्यों के साथ

- केंद्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान, मुम्बई के मात्स्यिकी संपदा प्रबंधन प्रभाग के आठ एम.एफ.एस सी छात्रों के लिए 21 जुलाई से 4 अगस्त 2012 के दौरान प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया.
- केंद्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान, मुम्बई के जलीय पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग के तीन एम.एफ.एस सी छात्रों के लिए 14 से 24 अगस्त 2012 के दौरान प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया.
- केंद्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान, मुम्बई के जलकृषि प्रभाग के सात एम.एफ.एस सी छात्रों के लिए 22 से 28 अगस्त 2012 के दौरान प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया.

"भारतीय तटों में पख मछली और कवच मछलियों के वितरण और प्रचुरता के जी आइ एस पर आधारित संपदा चित्रण" पर कार्यशाला

सी एम एफ आर आइ मांगलूर अनुसंधान केंद्र में 17 और 18 अगस्त 2012 को "भारतीय तटों में पख मछली और कवच मछलियों के वितरण और प्रचुरता के जी आइ एस पर आधारित संपदा चित्रण" विषय पर अखिल भारतीय कार्यशाला आयोजित की गयी. कार्यशाला में मछुआरों / नाव मालिकों, जी आइ एस विशारदों को मिलाकर कुल 80 लोगों ने भाग लिया. कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में डॉ.महेश्वरुडू, अध्यक्ष, क्रस्टेशियन मात्स्यिकी प्रभाग ने कार्यशाला पुस्तिका का विमोचन किया. इस अवसर पर सी एम एफ आर आइ, कोच्ची के क्रस्टेशियन मात्स्यिकी प्रभाग द्वारा रूपाइत और तैयार किए गए भारतीय तट के पेनिअइड चिंगट विषयक पोस्टर का विमोचन भी किया गया.

"समुद्री मछुआरों को विस्तार शिक्षा" पर क्षमता वर्धन कार्यक्रम के अंदर विषिंजम अनुसंधान केंद्र में 224 मछुआरों का मुआइना

तमिल नाडु सरकार द्वारा कार्यान्वित किए गए राष्ट्रीय कृषि विकास कार्यक्रम (एन ए डी पी) के " समुद्री मछुआरों को विस्तार शिक्षा" पर क्षमता वर्धन कार्यक्रम के अंदर तमिल नाडु के कन्याकुमारी तट के 224 मछुआरों ने दो संघों में सी एम एफ आर आइ विषिंजम अनुसंधान केंद्र का मुआइना किया. उनको प्लवमान पिंजरों में मछली और महाचिंगटों का पालन और सी एम एफ आर आइ द्वारा विकसित विभिन्न प्रकार की आधुनिक मछली पालन प्रौद्योगिकियों और इनकी साध्यताओं पर अवगाह दिया गया. कई मछुआरों ने अनुकूल स्थानों में समुद्री मछली पालन करने की अभिरुचि प्रकट की.

डॉ.ए.पी.लिप्टन, प्रधान वैज्ञानिक, विषिंजम अनुसंधान केंद्र मछुआरों को समुद्र कृषि की साध्यताओं का विवरण देते हुए

"चुने गए शीर्ष परभक्षियों और माक्रोफाइट्स का आवास-पारिस्थितिक जीवविज्ञान" पर कार्यशाला

डॉ.के.बालचन्द्रन, उप निदेशक, बी एन एच एस कार्यशाला के सहभागियों के साथ

यह समुद्री आवास व्यवस्था और विशेष प्रकार की कार्य प्रणालियों पर परियोजना के टीम को प्रबल बनाने और इस से अच्छा परिणाम प्राप्त करने के उद्देश्य से एफ ई एम प्रभाग द्वारा आयोजित पहली कार्यशाला है. एफ ई एम प्रभाग के वैज्ञानिक एवं तकनीकी कार्मिकों के साथ संस्थान के विभिन्न केंद्रों और मुख्यालय के अनुसंधान अध्येताओं ने कार्यशाला में भाग लिया. डॉ.के.बालचन्द्रन, उप निदेशक, बी एन एच एस ने कार्यशाला में भाग लिया. मुख्यालय में 11-14 सितंबर 2012 के दौरान कार्यशाला आयोजित की गयी.

संस्थान की कर्मचारी कल्याण निधि समिति का पुनर्गठन

संस्थान की कर्मचारी कल्याण निधि समिति का पुनर्गठन निम्नलिखित सदस्यों के साथ दिनांक 20.09.2012 के प्रभाव से किया गयाः

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, सी एम एफ आर आइ	अध्यक्ष
वरिष्ठ वित्त एवं लेखा अधिकारी, सी एम एफ आर आइ	सदस्य
प्रशासनिक अधिकारी, सी एम एफ आर आइ	सदस्य
डॉ.(श्रीमती) इमेल्डा जोसफ, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ, कोचीन	सदस्य
डॉ.आर.जयभास्करन, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ, कोचीन	सदस्य
श्री के.पी.जोण, उच्च श्रेणी लिपिक एवं सचिव (कर्मचारी पक्ष), आइ जे एस सी, सी एम एफ आर आइ, कोचीन	सदस्य
श्रीमती ए.लता, स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ, सी एम एफ आर आइ, कोचीन	सदस्य
सहायक प्रशासनिक अधिकारी (स्थापना), सी एम एफ आर आइ,	सदस्य सचिव

मुख्यालय में ओणम समारोह 2012

सी एम एफ आर आइ और एन बी एफ जी आर तथा सी आइ एफ आर आइ क्षेत्रीय केंद्रों के कर्मचारियों की पूर्ण सहभागिता से सी एम एफ आर आइ मुख्यालय में ओणम मनाया गया. ओणम समारोह के पहला दिन अत्तम से लेकर आठवां दिन उत्राडम (21 से 28 अगस्त तक) विभिन्न छात्र गण और कर्मचारियों ने फूलों से संस्थान के स्वागत कक्ष में पूक्कलम सजाया. ओणम समारोह 2012 के भाग के रूप में सी एम एफ आर आइ मनोरंजन क्लब द्वारा 25 अगस्त को म्यूसिकल चेयर, वडमवली जैसी मनोरंजन कार्यक्रम आयोजित किए गए. पूक्कलम प्रतियोगिता में एस ई ई टी टी प्रभाग को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ. इसी दिन अपराह्न को *ओणम सद्या* (केरल की परंपरागत दावत) थी और इसके बाद महिला कर्मचारियों द्वारा केरल का परंपरागत नृत्य *तिरुवातिराकली* भी आयोजित की गयी.

पूक्कलम के विजेताओं के साथ निदेशक

सी एम एफ आर आइ और भा कृ अनु प के *वडमवली* प्रतियोगिता का दृश्य लॉगो से सजाए गए *पूक्कलम*

वडमवली प्रतियोगिता का दृश्य

तिरुवातिराकली का दृश्य

विषिंजम अनुसंधान केंद्र में ओणम समारोह

मांगलूर के मनोरंजन क्लब द्वारा 15 अगस्त 2012 को आयोजित क्लब दिवस समारोह का दृश्य

मांगलूर अनुसंधान केंद्र में ओणम समारोह और परंपरागत *पूक्कलम* का दृश्य

उप महानिदेशक (कृषि विज्ञान) का कृ वि कें और पिंजरा मछली पालन स्थानों में मुआइना

डॉ.के.डी.कोकाते, उप महानिदेशक (कृषि विस्तार) ने किसानों के साथ विचार विनिमय करने और प्रगतियों का निरीक्षण करने के उद्देश्य से 17 अगस्त 2012 को सी एम एफ आर आइ के कृषि विज्ञान केंद्र का मुआइना किया. उन्होंने कृ वि कें के तेवरा के नए परिसर जहाँ पशुपालन और बागवानी का निदर्शन किया गया था, का भी निर्धारण किया. वहाँ कार्यरत खरगोश प्रजनन एकक की कार्यविधियों पर उन्होंने सराहना की और कृ वि केंद्रों द्वारा अन्य जिलाओं के किसानों को अच्छी गुणता के किट प्रदान करने का सुझाव दिया और केरल में पहली बार मक्का की खेती सफल रूप से शुरू करने के प्रयास की सराहना की. उन्होंने नारक्कल के कृषि विज्ञान केंद्र का भी मुआइना किया जहाँ मात्स्यिकी की कार्यविधियाँ प्रगति पर हो रही हैं. उन्होंने

डॉ.के.डी.कोकाते, उप महानिदेशक (कृषि विस्तार) पिंजरे से मछली पकडते हुए

पेर्ल स्पोट (*करिमीन*) जो केरल की मछली है, का संतति उत्पादन बढ़ाए जाने का सुझाव दिया.

अधिक ब्रूड स्टॉक तालाब तैयार करने और स्फुटनशाला का क्षेत्र बढ़ाए जाने की जरूरत है. केरल में पेर्ल स्पोट मछली की मांग की बढ़ती पर विचार करते हुए उन्होंने कृ वि कें को पेर्ल स्पोट पालन में सेन्टर ऑफ एक्सलेन्स के रूप में उन्मज्जन करने और मछली संततियों की पूर्ति के अतिरिक्त आवधिक रूप से प्रशिक्षण आयोजित करने का सुझाव दिया. किसानों का ग्रुप बनवाकर कृ वि केंद्र द्वारा उनकी क्षमता का वर्धन करने और इसके बाद सार्वजनिक जलाशयों में बडे पैमाने में पिंजरा निर्माण के लिए बैंकों से क्रेडिट की सुविधा का प्रबंधन करने का सुझाव भी उन्होंने दिया. कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा किए गए विविध प्रकार के हस्तक्षेपों का प्रलेखन करके उचित पत्रिकाओं में प्रकाशित करने की प्रधानता पर उन्होंने ज़ोर दिया.

देशज मुर्गी -कडकनात के पालन के लिए कृ वि कें का प्रोत्साहन

कडकनात मध्यप्रदेश के पश्चिम भाग के झाबुवा और धार जिलाओं में पालन किए जाने वाले मुर्गी के वर्ग है. स्थानीय रूप से मलयालम में इसे *करिंकोषी* कहा जाता है और मुख्यतः कई रोगों की परंपरागत चिकित्सा में और वाजीकर के रूप में इसे उपयुक्त किया जाता है. यह देखा जाता है कि इस चिडिया की जीवसंख्या में तेज़ घटती हो रही है और ये वंशनाश के भीषण के अधीन है. इन चिडियाओं के पालन और परिरक्षण पर प्रचार देने के लिए और शुद्ध मुन्ना मुर्गियों की उपलब्धता के अनुसार अंड संग्रह युक्त नर्सरी शुरू करने की योजना बनायी जा रही है और इन के निदर्शन एकक के द्वारा लोगों में अवगाह जगाया जा रहा है.

तेवरा में कडकनात मुर्गियों के पालन का दृश्य

कृ वि कें के उत्पाद विपणन के लिए तैयार

सी एम एफ आर आइ तेवरा परिसर में कृषि विज्ञान केंद्र के उत्पाद विपणन के लिए तैयार हैं. स्थानीय घरों में कृ वि कें के उत्पादों की बडी मांग है.

डॉ.षिनोज सुब्रमण्यन, कार्यक्रम समायोजक को जे एन पुरस्कार

डॉ. षिनोज सुब्रमण्यन, कार्यक्रम समायोजक, सी एम एफ आर आइ का कृषि विज्ञान केंद्र (एरणाकुलम) ने कृषि एवं अनुबंधित विज्ञान-2011 में अनुसंधान में डॉक्टरी थिसीस के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का महत्वपूर्ण जवहर लाल नेहरू पुरस्कार प्राप्त किया. नई दिल्ली में दिनांक 16 जुलाई 2012 को आयोजित भा कृ अनु प के 84 वां स्थापना दिवस में श्री शरद पवार, माननीय कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री से उन्होंने पुरस्कार स्वीकार किया.

डॉ.षिनोज पुरस्कार ग्रहण करते हुए

डॉ.सैदा रावु और डॉ.गोपकुमार श्रीलंका में

श्रीलंका में 18-22 जून 2012 के दौरान आयोजित द्वितीय द्विराष्ट्रीय पट्टेदार परामर्श कार्यक्रम के सहभागियों का दृश्य

डॉ.जी. सैदा रावु, निदेशक, सी एम एफ आर आइ और डॉ. जी. गोपकुमार, प्रभारी वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, समुद्री संवर्धन प्रभाग, सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र ने बे ऑफ बंगाल प्रोग्राम इन्टर गवेर्नमेन्टल ओर्गनाइसेशन (बी ओ बी पी-आइ जी ओ) तथा दि बे ऑफ बंगाल लार्ज मराइन इकोसिस्टम (बी ओ बी एल एम ई) द्वारा संयुक्त रूप से जाफना, श्रीलंका में 18-22 जून 2012 के दौरान आयोजित मान्नार खाडी आवास व्यवस्था और इसकी संपदाओं के परिरक्षण पर द्वितीय द्विराष्ट्रीय पट्टेदार परामर्श कार्यक्रम में भाग लिया और 'आकर्षक मछली जातियों के परिरक्षण और प्रबंधन के लिए सहकारी प्रयास- भारत के लिए कुछ विचार' विषयक लेख प्रस्तुत किया.

डॉ.जी.सैदा रावु, निदेशक

- समुद्रकृषि पर अखिल भारतीय सहकारी अनुसंधान परियोजना पर चर्चा करने के लिए निदेशक, सी ए आर आइ, पोर्ट ब्लेयर के साथ 09.07.2012 को आयोजित बैठक में भाग लिया
- नागयलंका में 10.08.2012 को पिजरा मछली के फसल संग्रहण में भाग लिया
- महानिदेशक, भा कृ अनु प द्वारा 21 और 22 अगस्त 2012 को आयोजित 'विज्ञान मेंला' में भाग लिया.
- 'कर्नाटक के उत्तर कन्नड जिला के समेकित विकास' पर कारवार में 1 सितंबर 2012 को आयोजित राष्ट्रीय परामर्श में भाग लिया
- दिनांक 9 सितंबर 2012 को सी एम एफ आर आइ वेरावल क्षेत्रीय केंद्र का मुआइना
- विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 14.09.2012 को आयोजित कार्यक्रम में माननीय गृह मंत्री की उपस्थिति में भारत के महामहिम राष्ट्रपति से इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार स्वीकार किया.

डॉ.आर.नारायणकुमार, अध्यक्ष, एस ई ई टी टी डी ने केंद्रीय कृषि अनुसंधान संस्थान (सी ए आर आइ), पोर्ट ब्लेयर में 8-9 जुलाई 2012 को समुद्र कृषि पर ए आइ सी आर पी की बैठक में भाग लिया.

- केंद्रीय खारा पानी जलजीव पालन संस्थान द्वारा 24-25 अगस्त 2012 के दौरान चेन्नई में आयोजित मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थानों के आर एफ डी नोडल अधिकारियों की बैठक में भाग लिया.

डॉ.जी.गोपकुमार, प्रभारी वैज्ञानिक, मंडपम क्षेत्रीय केंद्र ने सी ए आर आइ, आन्डमान में समुद्री संवर्धन में आगामी ए आइ सी आर पी / नेटवर्क कार्यक्रम से संबंधित बैठक में भाग लिया.

डॉ.विपिनकुमार वी.पी., वरिष्ठ वैज्ञानिक ने 'कृषि सूचना प्रबंधन और नेटवर्किंग के लिए आइ सी टी' विषय पर एम ए एन ए जी ई, हैदराबाद में 16 से 20 जुलाई 2012 के दौरान आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया.

- गुजरात सरकार के इन्डस्ट्रियल ओर्गनाइसेशन ब्यूरो, महात्मा मंदिर, गांधी नगर में 3 से 6 सितंबर 2012 के दौरान आयोजित 'अग्री बिसिनस एवं प्रौद्योगिकी के अगले सीमांत में राष्ट्रीय कनवेन्शन और एक्स्पोसिशन' में भाग लिया.

डॉ.लक्ष्मीलता मांचेस्टर, यू के में

डॉ.लक्ष्मीलता, वरिष्ठ वैज्ञानिक, विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र ने शंबु पालन के लिए उत्कृष्ट जलकृषि पद्धतियों के प्रलेख के समेकीकरण के लिए ग्लोबल अक्वाकल्चर एलियन्स, यू एस ए, जो मसल स्टान्डेड्स टेकनीकल कम्मिटी के 12 सदस्यों में एक सदस्य है, द्वारा मांचेस्टर, युनाइटड किंगडम में 18-19 जून 2012 के दौरान आयोजित शंबु मानक समिति बैठक में भाग लिया.

डॉ.श्याम सलिम तानसानिया में दार ई सलाम विश्वविद्यालय और मात्स्यिकी अर्थशास्त्र एवं विपणन का अंतर्राष्ट्रीय संस्थान द्वारा 16-20 जुलाई 2012 के दौरान ग्रान्ट हयाट, किलिमंजारो और दार ई सलाम विश्वविद्यालय, तानसानिया में आयोजित 'टिकाऊ मात्स्यिकी, जलकृषि और समुद्री खाद्य विपणनः दृश्यमान साध्यताएं' विषयक आइ आइ एफ ई टी 2012 के 16वां द्विवर्षीय सम्मेलन में भाग लिया.

डॉ.आर.जयभास्करन, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने आन्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह में राष्ट्रीय प्रवाल भित्ति अनुसंधान केंद्र की स्थापना के उद्देश्य से पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा रूपाइत 'कार्य दल' के सदस्य के रूप में भारतीय प्राणिविज्ञान सर्वेक्षण, पोर्ट ब्लेयर में 4 और 5 सितंबर 2012 को आयोजित बैठक में भाग लिया.

डॉ.श्याम सलिम मछली वितरण श्रृंखला में होने वाली असमताएं पार करने के लिए बनायी नामिका में हिलारी एग्ना, अक्वाफिश सी आर एस पी (सहकारी अनुसंधान) और मेरिल विल्यम्स (एफ ए ओ) के साथ 16-20 जुलाई 2012 के दौरान सत्र नामिका विशेषज्ञ के रूप में काम किया.

डॉ.शुभदीप घोष, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने सी आइ एफ आर आइ, बैरकपुर, कोलकत्ता द्वारा 19-20 जुलाई 2012 के दौरान हैदराबाद में आयोजित 'मेखला II की क्षेत्रीय समिति की 21वीं बैठक' में भाग लिया.

डॉ.पी.एस.स्वातिलक्ष्मी, वैज्ञानिक (एस एस) ने कृषक महिल पर अनुसंधान निदेशालय, भुवनेश्वर, उड़ीषा में जेन्टर मेइनस्ट्रीमिंग फोर रेसीलिएन्ट अग्रिकल्चर विषय पर आयोजित ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रम में संकाय सदस्य के रूप में भाग लिया और 01.08.2012 को समुद्री मात्स्यिकी सेक्टर में लिंग प्राचल और आइ टी के एवं जलवायु परिवर्तन विषय पर भाषण दिए.

श्री एड्विन जोसफ, प्रभारी अधिकारी, पुस्तकालय एवं प्रलेखन केंद्र ने आइ ए एस आर आइ, नई दिल्ली में 12.09.2012 को डाटा डिजिटाइसेशन कार्यशाला में भाग लिया.

श्रीमती के.पी.शालिनी, तकनीकी अधिकारी ने ग्रिगोरियस कॉलेज, कोट्टारक्करा के स्नातकाधीन और स्नातकोत्तर छात्रों को 27.09.2012 को 'संसूचना द्वारा विज्ञान' विषय पर सत्र का संचालन किया.

नियुक्तियाँ

नाम	पदनाम	केंद्र	प्रभावी तारीख
1. डॉ.ग्रिनसन जोर्ज	वरिष्ठ वैज्ञानिक	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	03.08.2012 (अपराह्न)
2. श्री हारिस एन.के.	सहायक	कारवार अनुसंधान केंद्र	07.06.2012
3. कुमारी राधिका कृष्णन जी.	सहायक	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	02.07.2012
4. श्री अनिल कृष्णा जी.	सहायक	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	04.07.2012
5. कुमारी सौम्या सुरेन्द्रन	सहायक	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	19.07.2012
6. कुमारी रम्या एम.	सहायक	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	23.07.2012
7. श्री राजर्षी चकमा	सहायक	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र	13.08.2012

पदोन्नतियाँ

नाम व पदनाम	पदोन्नत	केंद्र	प्रभावी तारीख
1. श्री हमीद बाच्चा, टी-6 (तकनीकी अधिकारी) सेवानिवृत्त	टी-7-8 (तकनीकी अधिकारी)	मद्रास अनु. केंद्र	12.12.2009
2. श्री एन. विश्वनाथन, टी-6 (तकनीकी अधिकारी)	टी-7-8 (तकनीकी अधिकारी)	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	13.02.2011
3. श्रीमती ई.के.उमा, टी-6 (तकनीकी अधिकारी)	टी-7-8 (तकनीकी अधिकारी)	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	29.06.2011
4. श्री एस. केम्पराजु, टी-5 (तकनीकी अधिकारी - हिंदी)	टी-6 (तकनीकी अधिकारी)	मांगलूर अनु. केंद्र	01.01.2011
5. श्रीमती ई.शशिकला, टी-5 (तकनीकी अधिकारी)	टी-6(तकनीकी अधिकारी)	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	29.06.2011
6. श्रीमती जी. शैलजा, टी-5 (तकनीकी अधिकारी)	टी-6(तकनीकी अधिकारी)	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	10.06.2011
7. श्री वी.ए.कुंञिकोया, टी-5 (तकनीकी अधिकारी)	टी-6(तकनीकी अधिकारी)	कालिकट अनुसंधान केंद्र	26.06.2012
8. श्री एन.राममूर्ति, टी-5 (तकनीकी अधिकारी-संग्रहालय)	टी-6(तकनीकी अधिकारी-संग्रहालय)	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र	01.07.2012
9. श्री उदय वी. अर्गेकर, टी-4 (वरिष्ठ तकनीकी सहायक)	टी-5 (तकनीकी अधिकारी)	भटकल क्षेत्र केंद्र	01.07.2011
10. श्री आर.वी.डी.प्रभाकर, टी-4 (वरिष्ठ तकनीकी सहायक)	टी-5 (तकनीकी अधिकारी)	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र	03.07.2011
11. श्री सत्यनारायण वी.पै, टी-4 (वरिष्ठ तकनीकी सहायक)	टी-5 (तकनीकी अधिकारी)	कारवार अनु. केंद्र	01.01.2012
12. श्री एस.डी.काम्बले, टी-4 (वरिष्ठ तकनीकी सहायक)	टी-5 (तकनीकी अधिकारी)	मुम्बई अनुसंधान केंद्र	01.01.2012
13. श्री ए.वाइ.मिस्त्री, टी-4 (वरिष्ठ तकनीकी सहायक)	टी-5 (तकनीकी अधिकारी)	मुम्बई अनुसंधान केंद्र	01.01.2012
14. श्री जयदेव एस.होटागी, टी-3 (तकनीकी सहायक)	टी-4 (वरिष्ठ तकनीकी सहायक)	मुम्बई अनुसंधान केंद्र	14.05.2011
15. श्री के.जी.राधाकृष्णन नायर, टी-3 (मोटोर ड्राइवर)	टी-4 (मोटोर ड्राइवर)	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	29.06.2011
16. श्री ए.षण्मुखवेल, टी-3 (तकनीकी सहायक)	टी-4 (वरिष्ठ तकनीकी सहायक)	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र	07.09.2011
17. श्री वी.लिंगप्पा, टी-3 (तकनीकी सहायक)	टी-4 (वरिष्ठ तकनीकी सहायक)	मांगलूर अनुसंधान केंद्र	20.09.2011
18. श्री ए.वैरमणी, टी-3 (तकनीकी सहायक)	टी-4 (वरिष्ठ तकनीकी सहायक)	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र	30.12.2011
19. श्रीमती वीणा षेट्टिगर, टी-3 (तकनीकी सहायक)	टी-4 (वरिष्ठ तकनीकी सहायक)	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र	28.03.2012
20. श्री एम.चनियप्पा, टी-3 (तकनीकी सहायक)	टी-4 (वरिष्ठ तकनीकी सहायक)	मांगलूर अनुसंधान केंद्र	06.08.2012
21. श्रीमती एम.वी.वत्सला, टी-2 (कनिष्ठ तकनीकी सहायक)	टी-3 (तकनीकी सहायक)	कालिकट अनुसंधान केंद्र	27.11.2010
22. श्री पी.विल्लन, टी-2 (कनिष्ठ तकनीकी सहायक)	टी-3 (तकनीकी सहायक)	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र	11.01.2011
23. श्री एस.वी.सुब्ब राव, टी-2 (कनिष्ठ तकनीकी सहायक)	टी-3 (तकनीकी सहायक)	ओंगोल क्षेत्र केंद्र	31.03.2011
24. श्री के.सी.हिसक्किएल, टी-2 (कनिष्ठ तकनीकी सहायक)	टी-3 (तकनीकी सहायक)	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	09.04.2011
25. श्री के.मुत्तुवेल, टी-2 (मोटोर ड्राइवर)	टी-3 (मोटोर ड्राइवर)	टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र	29.06.2011
26. श्री पी.नारायण नाइक, टी-2 (मोटोर ड्राइवर)(02.11.11 को निधन हुआ)	टी-3 (मोटोर ड्राइवर)	मांगलूर अनुसंधान केंद्र	29.06.2011
27. श्री पी. हर्षकुमार, टी-2 (मोटोर ड्राइवर)	टी-3 (मोटोर ड्राइवर)	मांगलूर अनुसंधान केंद्र	29.06.2011
28. श्री शशिकान्त आर. यादव, टी-2 (मोटोर ड्राइवर)	टी-3 (मोटोर ड्राइवर)	मुंम्बई अनुसंधान केंद्र	29.06.2011
29. श्री बेबी मात्यू, टी-2 (मोटोर ड्राइवर)	टी-3 (मोटोर ड्राइवर)	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	29.06.2012
30. श्री एम.अशोकन, टी-2(पेइन्टर एवं पोलिशर)	टी-3 (पेइन्टर एवं पोलिशर)	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र	26.07.2011
31. श्री के.लक्ष्मी नारायणा, टी-2 (मोटोर ड्राइवर)	टी-3 (मोटोर ड्राइवर)	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र	05.03.2012
32. श्री टी.नागलिंगम, टी-1 (क्षेत्र सहायक)	टी-2 (कनिष्ठ तकनीकी सहायक)	टूटिकोरिन अनुसंधान केंद्र	09.03.2009
33. श्री विजय कार्तिकेयन, टी-1 (इलक्ट्रीशियन)	टी-2 (इलक्ट्रीशियन)	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र	07.07.2011
34. श्री मंजीश आर., टी-1 (कंप्यूटर आप्लिकेशन)	टी-2 (कंप्यूटर आप्लिकेशन)	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	05.02.2012
35. श्री एम.पलनिचामी, टी-1 (इलक्ट्रीशियन)	टी-2 (इलक्ट्रीशियन)	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र	01.03.2012
36. श्री पी.आर.अभिलाष, टी-1 (एक्सिबिशन असिस्टन्ट)	टी-2 (एक्सिबिशन असिस्टन्ट)	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	05.04.2012
37. श्री आर.पी.वेंकटेश, टी-1 (फिट्टर)	टी-2 (फिट्टर)	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र	18.05.2012
38. श्री एस.एम.सिक्कन्दर बाच्चा, स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	टी-1 (क्षेत्र सहायक)	मंडपम क्षेत्रीय केंद्र	01.06.2012
39. श्री वी.एच.वेणु, स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	टी-1 (क्षेत्र सहायक)	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	02.07.2012
40. श्री वी.कृष्णन, स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	टी-1 (क्षेत्र सहायक)	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	01.08.2012

स्थानांतरण

नाम व पदनाम	से	तक	प्रभावी तारीख
1. श्री सुभाष के.नाइक, स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	गोवा क्षेत्र केंद्र	कारवार अनुसंधान केंद्र	07.08.2012
2. श्री पी.बी.जीवराज, स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	कालिकट अनुसंधान केंद्र	06.09.2012

अधिवर्षिता पर सेवानिवृत्ति

श्री सुरेन्द्रनाथन वी.जी.
टी-5 (तकनीकी अधिकारी)
कालिकट अनुसंधान केंद्र
31.07.2012

श्री योगेश दामोदर सावरिया
टी-5 (तकनीकी अधिकारी)
वेरावल क्षेत्रीय केंद्र
3.08.2012

श्री पी.वेंकटकृष्ण राव
टी-4 (वरिष्ठ तकनीकी सहायक)
पुरी क्षेत्र केंद्र
31.07.2012

श्री पी.डी.करुणाकरन
स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ
सी एम एफ आर आइ मुख्यालय
31.08.2012

श्री एस.करुणानिधि
स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ
मंडपम क्षेत्रीय केंद्र
31.08.2012

पदत्याग

नाम	पदनाम	केंद्र	प्रभावी तारीख
1. श्री मकवाना राजेशकुमार चन्दुभाय	टी-1 (क्षेत्र सहायक)	वेरावल क्षेत्रीय केंद्र	17.08.2012

बैठकें

संस्थान प्रबंध समिति की 73 वीं बैठक सी एम एफ आर आइ मुख्यालय, कोचीन में 23 जुलाई 2012 को आयोजित की गयी.

सी एम एफ आर आइ की XII वीं संस्थान संयुक्त कर्मचारी परिषद की पहली बैठक सी एम एफ आर आइ मुख्यालय में 2 अगस्त 2012 को आयोजित की गयी.

सी एम एफ आर आइ को इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार दूसरी बार

राजभाषा शील्ड

सी एम एफ आर आइ को वर्ष 2010-11 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के उत्कृष्ट कार्य और सराहनीय उपलब्धियों के लिए 'ग' क्षेत्र के स्वायत्त निकायों के वर्ग में इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार प्राप्त हुआ.

विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 14 सितंबर 2012 हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित गरिमामय कार्यक्रम में भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने पुरस्कारों का वितरण किया. डॉ.जी.सैदा रावु, निदेशक, सी एम एफ आर आइ ने पुरस्कार ग्रहण किया.

श्री सुशील कुमार शिन्डे, माननीय गृह मंत्री कार्यक्रम में अध्यक्ष रहे. श्री जितेन्द्र सिंह, माननीय गृह राज्य मंत्री ने बधाई भाषण दिया. सी एम एफ आर आइ को दूसरी बार यह पुरस्कार प्राप्त हो रहा है.

डॉ.जी.सैदा रावु, निदेशक, सी एम एफ आर आइ भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी से पुरस्कार स्वीकार करने का दृश्य

डॉ.जी.सैदा रावु, निदेशक, श्रीमती शीला पी.जे., सहायक निदेशक (रा भा) और श्रीमती ई.के.उमा, तकनीकी अधिकारी (हिन्दी) डॉ.एस.अय्यप्पन, महानिदेशक, भा कृ अनु प एवं सचिव, डेयर के साथ

कडलमीन
सी एम एफ आर आइ समाचार

कडलमीन, सी एम एफ आर आइ समाचार केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन का तिमाही प्रकाशन है। यह प्रकाशन तिमाही के दौरान संस्थान की प्रमुख कार्यविधियों पर विवरण देने के साथ साथ अनुसंधान क्षेत्र की नई गतिविधियों और सफलताओं पर प्रकाश डालता है और प्रौद्योगिकी जानकारियों को मछुआरा समुदाय तक विकीर्णन करता है।

केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
CENTRAL MARINE FISHERIES RESEARCH INSTITUTE
कडलमीन TM
cadalmin